दक्षिण ध्वनि

अंक:135

दक्षिण रेलवे

मुख्यालय, राजभाषा संगठन, चेन्नै - 600 003.

26.12.2023 -क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दक्षिण-ध्वनि एवं सहायक साहित्य का विमोचन

10.01.2024 - तकनीकी संगोष्ठी – विषय: कार्यस्थल पर संरक्षा

12.01.2024 - निर्माण कार्यालय/एळुंबूर में कार्यशाला – विषय: संवैधानिक प्रावधान/कार्यान्वयन के पक्ष

अंक: 135

दक्षिण ध्वनि

(सर्वत्र गुंजायमान हो यह ध्वनि)

संरक्षक
आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक

सह-संरक्षक
कौशल किशोर
अपर महाप्रबंधक

परामर्शदाता
पी.सुरेश
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
सहदेव सिंह पुरती
उप महाप्रबंधक,राजभाषा
मुख्यालय

सह-संपादक
सुश्री बिनीता सोय
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, मुख्यालय

सहयोग
श्रीमती एन.चित्रा, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय
श्रीमती वी.सुजाता, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय
श्री विजय सिंह मीना,कनिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

अभिकल्प एवं प्रस्तुति
श्री एस.बालसुब्रमणियन, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।
(केवल सरकारी प्रयोग के लिए)

संपर्क पता - राजभाषा संगठन,दक्षिण रेलवे मुख्यालय

भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

महाप्रबंधक कार्यालय
Office of the General Manager
चेन्नै/Chennai - 600 003.

आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक

संदेश

गति शास्वत नियम है, गतिशीलता शास्वत है। गति से जुड़ा परिवर्तन है और परिवर्तन की वर्तमान स्थिति ही अद्यतन कहलाती है। इसी परिवर्तन के क्रम में बीज से अंकुर, तना, शाखाएं, पत्ते एवं फूल-फल बनते हैं और अपनी अलग पहचान और महत्व-मूल्य पाते हैं। इस क्रम में कुछ हिस्से नष्ट हो जाते हैं, परन्तु बीज अनुकूल वातावरण पाते ही पुनः अपनी नई यात्रा आरम्भ करता है।

सृष्टि में ध्वनि का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य को सुविधा और आवश्यकतानुसार ध्वनि उत्पन्न करने की योग्यता प्राप्त है। इसी योग्यता के कारण सार्थक ध्वनियों के मेल से वह भाषा का विकास करता है और इसके माध्यम से अपने समाज की प्रगति के कालक्रम में अपनी भावनाओं का प्रकटीकरण करता है। अपनी पीढ़ियों से संचित अनुभवों, ज्ञान, विज्ञान और मान्यताओं को समाहित करता है।

इस तरह से भाषा, एक समाज के सर्वांगीण गुण – दोषों को अपने में समाहित कर आगे बढ़ती है। एक बीज की तरह ही भाषा में अक्षर ध्वनियाँ होती हैं, उनसे परिस्थितियों के अनुसार संकल्पनाएं और शब्द बनते हैं। परिवर्तन के क्रम में कुछ शब्द छूट जाते हैं और कुछ जुड़ जाते हैं।

भारतीय भाषाओं में ध्वनियों का एक आधार दिखाई देता है। इसी आधार क्रम से प्रस्फुटित होकर अक्षर, बोलियों और भाषाओं का निर्माण होता है। अलग-अलग परिस्थितियों से गुजरते हुए विभिन्न रूपों में सामने दिखाई-सुनाई देता है। इस बिखराव को पुनः एक साथ करने का प्रयास भारत सरकार ने हिंदी भाषा के माध्यम से किया है। इस प्रयास में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन बहुत ही प्रमुख स्थान रखता है।

दक्षिण रेलवे के राजभाषा विभाग ने अपनी गृह पत्रिका "दक्षिण ध्वनि" के नवीनतम अंक को प्रकाशित करने का निर्णय लिया है और यह प्रयास स्तुत्य है। इस पत्रिका के सभी पाठकों, लेखकों और प्रकाशन-वितरण से संबंधित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाइयाँ और शुभकामनाएं।

(आर.एन.सिंह)

भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

महाप्रबंधक कार्यालय
Office of the General Manager
चेन्नै/Chennai - 600 003.

कौशल किशोर
अपर महाप्रबंधक

संदेश

राजभाषा विभाग ने अपनी गृह पत्रिका “दक्षिण ध्वनि” का 135 वां अंक प्रकाशित करने का निर्णय किया है। यह एक सराहनीय प्रयास है। किसी भी भाषा की प्रगति के लिए जनमानस से उसका जुड़ाव आवश्यक होता है। इस कार्य में पत्र-पत्रिकाओं की निरंतरता का बड़ा हाथ होता है। इसकी विषय वस्तु भी इस कार्य में बड़ी भूमिका अदा करती है।

किसी भी भाषा में प्रकाशन, उस भाषा के लेखकों, विचारकों और चिंतकों को पैदा करता है। देश के दक्षिणी क्षेत्रों में इस तरह की पत्रिकाओं का निकलना, गैर हिन्दी भाषी चिंतकों को लेखन के लिए प्रोत्साहित करता है। उन्हें भी गृह पत्रिकाओं में लिखने का अवसर प्राप्त होता है।

भविष्य में भी यह पत्रिका इसी प्रकार जीवंत रहे,इसकी शुभकामनाएं।

(कौशल किशोर)

भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

मुख्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.

पी.सुरेश
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संदेश

“दक्षिण ध्वनि” पत्रिका का प्रकाशन लगातार जारी है। कुछ पत्र-पत्रिकाएं पाठकों के मन में इस तरह घर कर जाती हैं कि उनके ही अंकों का इंतजार रहता है। यह पत्रिका भी उनमें से ही एक है। इसमें विषयवस्तु का संकलन ऐसा होना चाहिए कि नए तौर पर अपने कार्य की शुरुआत करने वालों को भी इससे सहयोग और लाभ मिले।

आगे भी इसका प्रकाशन इसी तरह निरंतर जारी रहे। इस बात की शुभकामनाएं देते हुए संपादन और प्रकाशन कार्य में लगे सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाइयाँ।

पी. सुरेश

भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

मुख्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.

सहदेव सिंह पुरती
उप महाप्रबंधक,राजभाषा, मुख्यालय

संपादकीय

"दक्षिण ध्वनि" पत्रिका का नवीनतम अंक आपके हाथों में सौंपते हुए अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह वर्ष का पहला अंक है और लेखकों तथा पाठकों का समर्थन लगातार जारी है।

लेखकों से अनुरोध हैं कि अपनी लेखनी को ज्वलंत रखें और लोकप्रिय पत्रिका के प्रवाह को मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और उपादेय बनाए रखने में अपना योगदान बनाए रखें।

पाठकों और उनकी प्रतिक्रियाओं के बिना सबका प्रयास अधूरा लगता है। अतः सभी पाठकों से विशेष अनुरोध है कि अपनी प्रतिक्रियाओं से हमारे प्रयासों को प्रोत्साहित करते रहें।

सादर, शुभकामनाओं के साथ।

(सहदेव सिंह पुरती)

12.03.2024 - 15.03.2024
क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान,उदयपुर,उत्तर पश्चिम रेलवे
श्री एम.बी.सुभाष कुमार, तकनीशियन, पालक्काड मंडल को 'बेस्ट एक्टर' नाटक में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार

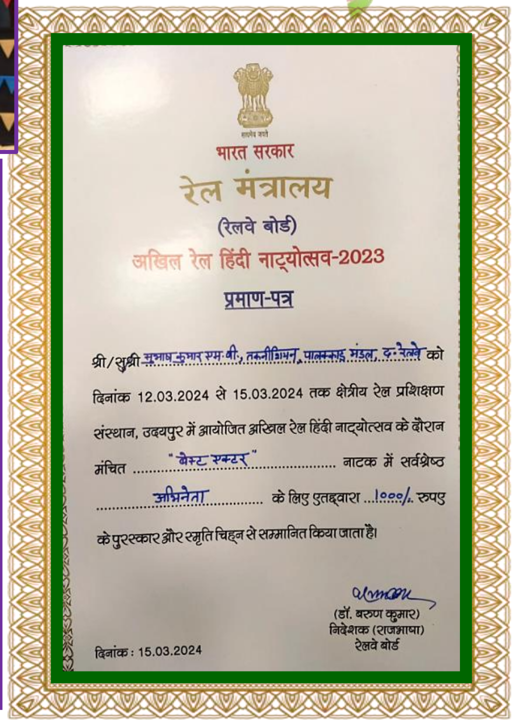

भारत सरकार
रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)
अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव-2023
प्रमाण-पत्र

श्री/सुश्री सुभाष कुमार एम.बी., तकनीशियन, पालक्काड मंडल, द. रेलवे को दिनांक 12.03.2024 से 15.03.2024 तक क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव के दौरान मंचित "बेस्ट एक्टर" नाटक में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए एतद्द्वारा 1000/- रुपए के पुरस्कार और स्मृति चिह्न से सम्मानित किया जाता है।

(डॉ. बरुण कुमार)
निदेशक (राजभाषा)
रेलवे बोर्ड

दिनांक : 15.03.2024

18.03.2024 क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक – सहायक साहित्य का विमोचन

28.05.2024 मुख्यालय के संपर्क लिपिकों के लिए कार्यशाला

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	नाम श्री/सुश्री	पृष्ठ सं.
1.	प्यारा देश हमारा (कविता)	सहदेव सिंह पुरती	1
2.	कसम	सहदेव सिंह पुरती	2
3.	ज्ञात कथा– अज्ञात नीति!	ए. श्रीनिवासन	5
4.	मिथिला : बिहार का गौरव	अभिषेक कुमार	8
5.	रंगीला राजस्थान (राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता)	धर्मराज मीणा	10
6.	संयुक्त राष्ट्रसंघ	आर. इन्दुबाला	12
7.	लालची मंत्री (कहानी)	सर्वेश कुमार निगम	15
8.	अब दांपत्य रिश्ते क्यों नहीं रह पाते टिकाऊ	रूपा मंडल	22
9.	जिसे आप बना नहीं सकते उसे नष्ट न करें	वा.पूर्ण कामेश्वरी	25
10.	राजनीतिक और प्राकृतिक तापमान (कविता)	विकाश कुमार शर्मा	28
11.	माँ (कविता)	धर्मवीर	29
12.	भगता परब	तारकेश्वर महतो	30
13.	वार्तालाप	वी.जयश्री	31
14.	बच्चों की पढ़ाई	ए. सुब्रमणि	33
15.	दक्षिण अयोध्या- भद्राचलम	एम.गीता	34
16.	एक पत्र - स्वर्गवासी दादी के नाम	कुंदन कुमार राउत	36
17.	साइबर अपराध	जेब सेल्व शांति	37
18.	बढ़ती गर्मी की लहरें	मनु शिवशंकर	39
19.	सिक्का-पक्का	एस. बालसुब्रमणियन	41
20.	तमिल मंचीय नाटक जगत के जनक	आर.उषानंदिनी	43
21.	पैसे की दुनिया (कविता)	नारायण जी चौबे	45
22.	रेलवे शब्दावली	संकलित	46

प्यारा देश हमारा (कविता)

सहदेव सिंह पुरती
उप महाप्रबंधक, राजभाषा, मुख्यालय

इतना सुंदर देश हमारा
इतनी प्यारी आज़ादी
आओ मिलकर मनाएं
अपने जश्न-ए-आज़ादी ।

आओ सब गले मिलें
बंधुत्व आपस में बढ़ाएं
हम संतान इस मातृभूमि के
सबको यह पाठ पढ़ाएं ।

अपनत्व हो हम सब में
हम इसका ध्यान रखेंगे
विश्वास न टूटे किसी का
ऐसा आचरण करेंगे ।

हर किसी के दुख सुख का
एहसास हम करेंगे
जरूरतमंद हो जब कोई
सहारा देना सीखेंगे ।

इससे राष्ट्र सबल होगा
सब एक सूत्र में बंधेंगे
वासुदैव कुटुंबकम को
यहीं से पहले साधेंगे ।

इतना प्यारा देश हमारा
हम सब इसकी संतान
अपने सत्कर्मों से बढ़ाएं
अपनी मातृभूमि का मान ।

कसम

सहदेव सिंह पुरती
उप महाप्रबंधक, राजभाषा, मुख्यालय

ट्रेन से उतर कर गाँव की ओर जाने लगा कि चौराहे पर हाई स्कूल के दो मित्र दिखाई दिए। बहुत ही सुबह का समय था। उन्हें यहाँ देख कर हम अचंभित हुए। दुआ सलाम हुई तो उन दोनों ने पूछा कि हमने किस कॉलेज में दाखिला लिया है । जब हमने अपने कॉलेज का नाम बताया तो वे बहुत खुश नहीं लगे। वहाँ दो कॉलेज थे एक तो अपने हाई स्कूल से चार किलोमीटर पर ही था । यह नया ही खुला था । छात्र-छात्राओं में यहां दाखिला लेने का उत्साह नहीं था। दूसरा करीब सत्तर किलोमीटर की दूरी पर था। यह शहर में था और बहुत पुराना था । इसलिए इसका बहुत नाम था । उन्हें लग रहा था कि मैं शहर के नामी कॉलेज का नाम लूंगा, पर जब मैंने नजदीक के कस्बे के कॉलेज का नाम लिया तो उनकी आंखों की चमक थोड़ी मलिन हो गई। दोनों ने एक साथ कहा, भैया शहर का कॉलेज जाते तो बहुत अच्छा होता। "यह भी तो ठीक ही है", हमने कहा। "हम शहर के कॉलेज का खर्चा नहीं उठा सकते, इसलिए यहीं दाखिला ले लिया । पढ़ाई ही तो करनी है कॉलेज चाहे कोई भी हो, क्या फर्क पड़ता है।" इससे वे थोड़ा आश्वस्त लगे तो हमने भी उनके कॉलेज के बारे में जानना चाहा । हमें यह जानकर बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ कि वे दोनों ही परीक्षा पास नहीं कर सके। ये दोनों हमारे उन मित्रों में से थे, जिन्हें छात्रावास में किसी भी चीज की कमी नहीं थी । हमारे हाई स्कूल का नया छात्रावास भवन बना था। यह दो मंजिला था। छात्रावास नया होने के कारण वहाँ जगह की कोई कमी नहीं थी । अत: वहाँ जगह मिलने में कोई कठिनाई नहीं थी । छात्रावास का यह दो मंजिला पक्का मकान अपने आप में एक जिज्ञासा की चीज थी । हमारे बड़े भाई कुछ काम करने लगे थे । कुछ महीनों के लिए थोड़ी आय होने लगी थी । उन्होंने हमें सुझाव दिया कि हम कुछ माह छात्रवास में रहें तो ठीक रहेगा । यह हाईस्कूल का अंतिम वर्ष था । मैट्रिक परीक्षा के लिए सात-आठ महीने बाकी थे । हमें बड़े भाई का सुझाव पसंद आया । छात्रावास में दाखिला ले लिया । इसी छात्रावास में इन मित्रों से मित्रता गहरी हुई थी । दोनों ही पहले शहर के महंगे और अच्छे स्कूलों में पढ़ते थे । कुछ कारणवश इन्हें वहाँ से निकाल कर हमारे स्कूल में डाला गया था । हमने हर क्षेत्र में उन्हें अपने से बहुत बेहतर पाया । उनके लिखने की रफ्तार बहुत तेज थी ।

वे शहर की सभी चीजों के बारे में बात कर सकते थे – जैसे कॉलोनी, क्वार्टर, सेक्टर, स्कूटर, मोटरसाइकिल, बस, जीप, कार, थिएटर ,साइन्स, कॉमर्स, आदि। इन सब बातों का हमारे कुछ पल्ले नहीं पड़ता था। उनके पिताजी नौकरीपेशा थे। उन्हें सप्ताह में या महीने में एक निर्धारित रकम मिलती थी । उनके पास बैंक पासबुक भी थी। बहुत बार जब वे आपस में बात करते, हमें ऐसा लगता था जैसे वे किसी दूसरी ही दुनिया से आए हैं और उस दुनिया की बातें कर रहे हैं । उनके पास पहनने के लिए भी पाँच - छह जोड़ी अच्छी पोशाक होती । जूते, चप्पल, सेंडल सब पहनते और ठाट से निकलते , जबकि हम एक ही कपड़ा सप्ताह के पाँच दिन पहनते । रविवार को धो कर उस रात सिरहाने रखकर आयरन करते । फिर सप्ताह भर उसी को पहनते । इतना होने पर भी हमारी - उनकी दोस्ती चलती रही । भारत त्योहारों का देश है । गाँव के लोग सबसे ज्यादा त्योहार पसंद होते हैं । मौसम के अनुसार गांवों में त्योहार होते

हैं। उन त्योहारों के अनुरूप वहाँ नाच गाने होते हैं। त्योहारों को छोड़कर भी गाँव वाले कभी - कभी दिन भर के काम से निपटकर रात को खाने पीने के बाद नाच-गाकर अपना मनोरंजन करते हैं। इधर नाचगान का यह सिलसिला सप्ताह में नज़दीकी हाट के दिन होना चल पड़ा था। यह कार्यक्रम नज़दीकी साप्ताहिक हाट के दिन अवश्य संपन्न किया जाता। गाँव के नृत्य - गान पसंद लोग अखाड़े में आकर नृत्य - गान करते।

गाँव का आदमी सुबह बहुत जल्दी जाग जाता है। एक दिन सुबह चार बजे हॉस्टल से बाहर निकला। तीन दोस्तों को हॉस्टल परिसर के बाहर देखा। उन तीन मित्रों में से दो ये मित्र भी थे। सुबह का समय आँखें नींद से बोझिल, थकान से भरे और सिर के बालों में धूल पड़ी हुई थीं। इस हालात में अलसुबह उन्हें देख बड़ी हैरानी हुई। पूछा तो पता चला कि वे बगल के गाँव में रात को नृत्य के लिए गए थे। हम समझ गए उनके सिरों पर नृत्य अखाड़े से उड़ी हुई धूल जमी है। यह रविवार की सुबह थी। अतः छुट्टी का दिन होने के कारण दिन को सो कर ये लोग रात भर की थकान मिटाएंगे। छात्रावास का गेट रात को नौ बजे बंद हो जाता है। साढ़े दस बजे तक सभी बच्चे सो जाते हैं। छात्रावास में रात साढ़े दस बजे से अधिक देर तक रात को पढ़ते रहने की आज्ञा नहीं थी।

सब के सो जाने पर इनकी दुनिया जाग जाती थी। आकर्षक परिधान पहनते थे। शरीर और वस्त्रों में सुगंधित तेल लगाते। अपने - अपने कमरों से निकल जाते। वस्त्रों- पहनावों में जल्दी-जल्दी दुहराव न आए, इसलिए बहुत बार छात्रावास के अन्य साथियों के कपड़े और जूते भी माँग लिए जाते थे। ऐसा इसलिए किया जाता था ताकि अपनी -अपनी प्रेयसी को यह जताया जा सके कि यह जो प्रियतम है, चाहने, खयाल रखने वाला और सुंदर ही नहीं बल्कि धनवान और खाते - पीते घर का है।

जब उन्हें इस बात का यकीन हो जाता है कि चौकीदार गहरी नींद में सो चुका है, वे दबे पाँव मुख्य द्वार पर आ जाते। कहीं कुत्ता न भौंकने लग जाए, इसलिए कुत्ते के साथ दोस्ती गांठ ली गई थी। सप्ताह के सभी दिन उसको थोड़ा खाना दिया जाता। उसे सभी दिन एक नाम से पुकारा जाता। समय - समय पर बड़े प्यार से पुचकारा जाता। कभी - कभी तो कसाई के यहाँ से माँस - हड्डियों के टुकड़े और दुकान से बिस्कुट लेकर उसे खिलाया जाता। रिश्ते आपस में इतने दोस्ताने हो गए थे कि वह कभी भी इन तीनों को देखता तो बस पूंछ हिलाता। वह पूंछ हिला कर एहसान और प्यार जताता था। इन्हें देख कर शोर मचाने का सवाल ही नहीं उठता।

मुख्य द्वार पर लोहे की ग्रिल लगी हुई थी। ताला बंद ग्रिल से बाहर निकलने की जुगत इन्होंने निकाल ली थी। तीनों के शरीर का आयतन और ऊंचाई तकरीबन बराबर थी। पहले वे ग्रिल से बाहर एक पैर निकाल लेते थे। इसके बाद झुक कर अपने पेट से पूरी तरह हवा निकाल कर और शरीर को ढकेलते हुए सिर को ग्रिल से बाहर निकाल देते थे। बारी - बारी से इस तरह तीनों हॉस्टल से बाहर निकल जाते और बगल के गाँव के नृत्य अखाड़े में पहुंच जाते थे। जब उन्हें लगता नृत्य नहीं होने वाला है तो वहाँ भी दो लोगों का जुगाड़ लगा लिया गया था। ये दो ऐसे लोग थे जो ढोल - मृदंग बजाने में माहिर थे। उन्हें उस दिन खिलाया- पिलाया जाता और पॉकेट खर्च दिया जाता था। इसलिए वे भी सप्ताह में आने वाले इस दिन का इंतजार करते थे।

हमें जब पता चला कि इस तरह से काम किया जा रहा है तो हमने एक अच्छे दोस्त होने का फर्ज निभाना चाहा। उन्हें समझाया कि यह सब ठीक नहीं है। माँ बाप हमें कितने अरमानों से यहाँ भेजे हुए हैं।

वे चाहते हैं कि हमें किसी बात की तकलीफ़ न हो। वे हमारी हर बात का ध्यान रखते हैं। उन सबकी दिली इच्छा यही है कि हम ईमानदारी से अपनी पढ़ाई करें। अपना भविष्य उज्ज्वल बनाएँ। हमें अपने पूज्य माता - पिता से इस तरह दगा नहीं करनी चाहिए। हमारी इन सारी भली बातों का उन पर कोई असर नहीं हुआ। उस गाँव के युवक - युवतियों से ही नहीं, वहाँ के अन्य लोगों से भी इन्होंने अपना मेल - जोल बढ़ा लिया था। अपने घर - परिवार की बातों को वे उनके सामने इस तरह पेश करते कि सबको लगता कि वे सभी बहुत भले और बड़े घरों के लड़के हैं। अपने ही समाज के अंग हैं। अतः इनके इस गाँव में आने जाने से गाँव को कोई नुकसान नहीं है। हाँ, वे सब थे तो भले ही घरों से। साथ ही पढ़ते-लिखते भी थे। अतः उनसे कोई शिकायत वहाँ पर किसी को नहीं थी। चल तो सब कुछ ठीक-ठाक रहा था। इन हालात में भी पढ़ाई चली। परिक्षाएं आईं। लिखी गईं। परिणाम भी आया। स्कूल से दस्तावेज निकाले गए। अपनी सामर्थ्य और पसंद के अनुसार कॉलेज चुनकर एडमिशन ले लिया गया। इधर किस्मत का भी बहुत नाम लिया जाता है। इसी किस्मत का खेल ऐसा था कि कुछ पास और कुछ फेल हुए। परंतु जो फेल हुए ये दो महानुभाव उन्हीं लोगों में शामिल थे।

इन दोनों ने हाथ जोड़कर कहा, भैया हम बड़े दुखी हैं कि हमने आपकी बातें नहीं मानीं। अगर हम मान लेते तो ये नौबत नहीं आती। अब हम आपके सामने कान पकड़कर कसम खाते हैं कि भविष्य में और वैसी गलती नहीं करेंगे।

हम तो वहाँ से निकल लिए, पर हमारा दिल कुछ दिनों तक यह सवाल पूछता रहा, जिन लोगों को कसम की मर्यादा और महत्व का गुमान नहीं, वैसे लोग बात-बात पर कसम खा कर क्यों अपने और सामने वालों को धोखा देते हैं। इस तरह कसम खा लेने से ही सब ठीक हो जाता तो फिर क्या बात थी, चरित्र, अनुशासन, मेहनत जैसी बातों पर आचरण करने की जरूरत ही क्यों पड़ती।

तभी ख्याल आया, अगर उन्हें अपने वादे - इरादे और ऐसी कसमों का मूल्य ज्ञात होता तो क्या वे इस तरह फोकट में कसम खा लेते ? जो ऐसे मूल्यवान और ज़िम्मेदारी भरे कथनों को सिर्फ शब्द मानकर इस्तेमाल करेंगे तो उनकी जिंदगी तो ऐसी होनी ही थी। हाँ, आगे उन्हें इतनी सद्बुद्धि आ जाए कि वे शब्दों की कीमत पहचाने और तदनुसार अपने जीवन में बदलाव ले आएं तो जीवन तो आगे बढ़ने, पल्लवित - पुष्पित होने को ही तो बनी है। दुआ है कि देर- सबेर वे कसम खाने का महत्व पहचान और समझ जाएं।

ज्ञात कथा– अज्ञात नीति!

ए.श्रीनिवासन
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,चेन्नै मंडल

तमिऴ में कई ऐसी कहानियाँ हैं जो बच्चों को सिखायी जाती हैं। हमारी भारतीय पद्धति ऐसी है कि बच्चों को बिना अर्थ जाने ही रटने के लिए कहा जाता है। बड़े होने के बाद जो भी वे सीखते हैं उसे याद रखते हैं क्योंकि वे उसका अर्थ समझते हैं, आनंद विभोर होते हैं। संस्कृत में एक सुप्रसिद्ध श्लोक है -

आचार्यात् पादम् आधत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया ।
पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च ॥

इसका अर्थ यह है कि गुरु एक चौथाई ही सिखा सकते हैं। एक चौथाई तो शिष्य को अपनी स्वमेधा से सीखना है और सीखता है। एक चौथाई अपने सह-पाठियों से सीखता है। अंतिम एक चौथाई केवल समय आने पर ही सीख सकता है। इसमें निहित गूढार्थ, लक्ष्यार्थ अनगिनत रहस्यों को खोल देता है।

बड़ी उम्र में रटना बहुत ही मुश्किल है। तमिऴ में प्रत्येक वाक्य के पीछे एक उपन्यास लिखने योग्य बातें होती हैं। वास्तव में वेद कभी लिखा नहीं जाता। इसे तमिऴ में **एऴुदाक्किऴवि** कहते हैं जिसका अर्थ **न लिखी गयी किताब** है। अधिकांश या सभी विषय पुराने ज़माने में यानी मुद्रण के पहले पद्य रूप में ही होते थे जिनको रटा जाता था तभी जाकर याद में रहते थे।

मुद्रण के बाद गद्य साहित्य के विभिन्न रूप उभरने लगे । याद रखने की उतनी ज़रूरत नहीं थी। सब कुछ अनेक प्रतियों में मिल जाता था। ध्यान देने योग्य बात यह है कि पद्य भी काव्य से, मुक्तक से, हैकूऔर आगे भी विशिष्ट रूप में आ गया है जैसे लिमरिक। कहानी यद्यपि बहुत ही पुरानी विधा है फिर भी उपन्यास, एक पृष्ठ की कहानी, चंद शब्दों की कहानी, निर्णयहीन कहानी आदि कई नए रूप धारण कर चुकी है।

मैं यहाँ बहुत पुरानी कथाओं में कुछेक या किसी एक को लेकर उसमें निहित गहनतम नीति की चर्चा करने वाला हूँ। **वड़ा बनाने वाली दादी की कहानी (पाट्टी वडै सुट्ट कदै)**बचपन में लगभग सभी ने सुनी होगी। पता नहीं कि यह कथा केवल तमिऴ में है या भारत की अन्य भाषाओं में भी। मेरा मानना है कि लगभग सभी भारतीय भाषाओं में ऐसी कहानियाँ होती हैं । सरसरी नज़र से देखने पर लगेगा कि बहुत ही मामूली, नाम मात्र की नीति की कहानी है। पर थोड़ा गहराई से अध्ययन करें तो लगेगा कि जीवन-पाठ सीखने के लिए यह कहानी ही काफी है।

तमिऴ कहानी इस प्रकार है - एक दादी है। बहुत ही सामान्य दादी है। वह एक पेड़ के नीचे रोज सुबह एवं शाम को वड़ा बनाकर बेचती थी और जो भी थोड़ा-सा मुनाफा होता था उससे जीवन-यापन करती थी। एक दिन की बात है। एक दिन जब वह वड़ा बना रही थी तब उस पेड़ के ऊपर एक कौआ बैठा था। वह भूखा था। कौआ पेड़ से नीचे आया और एक वड़ा उठाकर दूसरे पेड़ पर चला गया। दादी को इसका पता भी नहीं था। दूसरे पेड़ पर बैठकर वड़ा खाने ही वाला था कि वहाँ एक सियार आया। सियार ने कौए को देखा और वड़ा को भी देखा। सियार कौए से बोला- आप इतने सुन्दर हैं। आपकी आवाज बहुत ही मीठी है। मेरे वास्ते कृपया एक गीत गाइये। मूल कथा में यह लिखा है कि कौआ गाता है और वड़ा नीचे गिर जाता

है । सियार उसे लेकर भाग जाता है। कौआ धोखा खाता है। नीति यह है कि आप किसी को धोखा देते हैं तो आपको कोई-न-कोई जरूर धोखा देगा।

लेकिन आजकल के वर्शन में इसमें छोटा-सा परिवर्तन किया गया है। नए पाठ के अनुसार जब सियार कौवे से गाना गाने को कहता है तो कौआ अपने पॉव के नीचे वड़ा रखकर गाता है और सियार अपनी विफलता पर मन-मसोसकर वहाँ से चला जाता है। आजकल की पीढ़ी इसी पाठ की प्रशंसा करती है और पहलेवाले पाठ को पसंद नहीं करती।

मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि क्यों हमारे पूर्वजों ने किसी भी कार्य, नीति के लिए कारण नहीं बताया? या उसके मूल अर्थ को विस्तार से क्यों नहीं समझाया ? और क्यों न हमने इस संबंध में पूछा कि कारण क्या है। लेकिन आप ही सोचिए, अगर हमने उनसे कारण पूछा होता तो हमें मिलता क्या था। एक मार या चल, भाग यहां से, की धमकी ही और हम भी यह मान जाते थे कि चलो, इसके पीछे भी कोई-न-कोई कारण होगा ! इसीलिए तो बड़े लोग ऐसा बोलते हैं । लेकिन मुझे अब अफसोस हो रहा है कि काश, हमने कारण जान लिया होता तो अपने बच्चों को तो बता सकते थे क्योंकि आज की पीढ़ी सबके पीछे का कारण जानने को इच्छुक हैं, तभी जाकर ये लोग उसका अनुकरण करें या न करें, इसपर निर्णय लेंगे।

तमिऴ के सुप्रसिद्ध बाल साहित्य **आत्तिच्चूडी** को हाल ही में पुनः पढ़ने का अवसर मिला। वैसे तो जब बच्चा था तब तो उसे रटने के लिए कहा गया था और अर्थ जाने बिना ही हमने रट लिया था। याद तो हो गयी। पर तब उसका अर्थ नहीं जाना था और न ही जानने की कोशिश की थी। अब दुबारा जब उसको पढ़ा तो मुझे उसकी गहराई मालूम हुई। प्रत्येक वाक्य में जिंदगी का सार देखने को मिला। इसके बाद अब विक्रमादित्य की कहानियों और तमिऴ के सुप्रसिद्ध छोटी-छोटी कहानियों का अध्ययन करने लगा हूँ। तभी जाकर यह कहानी और उसका वास्तविक अर्थ समझ में आया। मैं बहुत आश्चर्य चकित हो गया और यह मुझे यह बहुत पसंद आने लगा है। सोचा कि पाठकों को भी इसका रसास्वादन करने का मौका दिला दूं।

आजकल की पीढ़ी जैसे मैने बताया अधिकांश दूसरे वर्शन को ही पसंद करते हैं। यानी कौआ वड़ा, अपने पैरों तले रखकर गाया। लेकिन वास्तव में पहले जो मूल कहानी है वही सर्वोत्तम है। वास्तव में इसेपीएचडीस्तर पर अध्ययन हेतु रखना है क्योंकि इसकी नीति में जीवन का सुगम पथ छिपा है।

इस कहानी की नीति में से प्रमुख रूप से तीन नीतियाँ हैं –

1. कौआ काला है। उतना सुंदर तो नहीं। उसकी आवाज़ भी बहुत मीठी नहीं। लेकिन जब सियार ने बताया की – तुम बहुत सुंदर हो और तुम्हारी आवाज़ एकदम मीठी है, एक गीत गाओ। तो तुरंत गा लेता है और वड़ा नीचे गिर जाता है , सियार उसे लेकर भाग जाता है। कौआ धोखा खाता है। इससे यह पाठ सीखनी है कि **किसी भी व्यक्ति को/ किसी की भी प्रशंसा करके धोखा दिया जा सकता है। अपनी स्तुति से संतुष्ट न होनेवाले प्राय: दुनिया में नहीं हैं। भगवान को भी स्तुति-प्रिय करके एक नाम है। किसी से काम होना है तो उसकी प्रशंसा करो। यह पहली नीति है।**
2. **आपकी प्रशंसा कोई करता है तो इसका मतलब यह है कि आपको सावधान रहना है, शायद आपको कोई धोखा दे रहा है।** सबको अपनी-अपनी प्रशंसा करने के लिए ही फुर्सत नहीं तो दूसरों की प्रशंसा क्यों करते ? एक सूक्ति है कि **बिना कारण कोई कुछ उपकार, भलाई करता है तो अवश्य**

ही उसके पीछे कोई-न-कोई कारण है। इसलिए जब कोई हमारी प्रशंसा करता है तो उसके पीछे हमसे कुछ-न-कुछ लाभ प्राप्त करने का इरादा हो सकता है।

3. तीसरी नीति से ही प्राय: सभी परिचित हैं- **आप किसी को धोखा देते हैं तो ज़रूर आप किसी से धोखा खाएँगे।** यह तो भारत की जीवन शैली का मूलभूत आधारिक सिद्धांत है। कर्म करके कोई उसके फल से बच नहीं सकते। जो करते हैं वही वापस आता है। भलाई करने से भलाई और बुराई करने से बुराई वापस आती है।

एक और छोटी-सी कहानी है पर चिरस्मरणीय है। कबूतरों का एक झुंड था जिसका मुखिया चित्रग्रीव था। वह मध्यम आयु का था पर वही मुखिया था। कहानियाँ चलती है कि जंगल के एक शिकारी ने पक्षियों या पशुओं को पकड़ने के लिए जाल बिछाकर उसमें धान छिटकाया था और पक्षियों के फंस जाने के इंतज़ार में था।

संयोगवश उस कबूतरों का झुंड उसी ओर से निकला। नीचे जाल में छिटके धान देखकर सभी ने सोचा कि आज शुभ-दिन है। शीघ्र ही खाना मिल गया। सब उतरने ही वाले थे कि चित्रग्रीव ने बताया कि थोड़ा रुकिए और सोचिए। इस जंगल में कहाँ से अचानक धान आए? इसमें कुछ गड़बड़ है। जरा सोचते हैं, पर बाकी पक्षी उस कथन से संतुष्ट नहीं थे। सबसे युवा कबूतर बोलने लगा कि ऐसा सोचते रहेंगे तो खाना दिन भर नहीं मिलेगा। अवसर छूट जाने से फिर हाथ न आएगा। आप तो मुखिया होने के दंभ से कुछ-न-कुछ उल्टा-सीधा बोलते रहते हैं। उसने बाकी कबूतरों को देखते हुए कहा – आइये हम जाएँगे। चित्रग्रीव आए न आए। वह भूखा ही मरे। मुखिया को छोड़कर शेष सभी कबूतर नीचे उतरे और धान चुगते-चुगते जाल में फंस गए। अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत वाली बात हो गई। मुखिया पास के पेड पर से यह सब देख रहा था। उसने कुछ योजना बनाई और नीचे वह भी आ गया और जाल में स्वयं आकर फंस गया। तब सभी रोने लगे और और उस युवा कबूतर को डाँटने-फटकारने लगे। चित्रग्रीव ने बताया कि अब हमे आगे की बात सोचनी है। हमारी सोच यही होनी है कि कैसे यहाँ से बचे। चंद पल में एक उपाय सूझा और बताया कि हम सब एक साथ उड़ेंगे। तब यह जाल भी आएगी। यद्यपि जाल के अंदर ही हम रहेंगे फिर भी यहाँ से पहले बचेंगे। फिर मैं सोचकर बताता हूँ कि आगे क्या करना है। सभी राजी हो गये। एक साथ जाल के साथ उड़ने लगे।

तब तक चित्रग्रीव ने दूसरा उपाय सोच लिया और अपने एक चूहे दोस्त के स्थान की ओर उड़ने लगा। वहाँ आते ही सभी चहकने लगे। आवाज़ सुनकर चूहा बाहर निकला और स्थिति समझ कर जाल काटा और सभी कबूतरों को मुक्त कर दिया। सभी कबूतर खुशी-खुशी निकल पड़े। चित्रग्रीव भी धन्यवाद अदा करते हुए निकल पड़ा।

कहानी मामूली है। पर प्रतिभाशाली मुखिया का होना, मुसीबत के समय में मुखिया का साथियों के साथ रहना और सही सोच से सहायता करना, सही दोस्ती और सही समय में उसका उपयोग आदि बातें एक मुखिया के विशेष गुणों से हमें अवगत कराते हैं। मुखिया की सोच, ज्ञान, भाव आदि भी बहुत ही सरलता से सिखाया गया है।

इस प्रकार तमिऴ की अधिकांश कहानियां या चंद शब्दों की सूक्तियों में सार की भरमार है। आश्चर्य की बात यह है कि ये सभी प्रथम या द्वितीय कक्षा में पढनेवाले बच्चों को सिखाए जाते हैं। रटने को कहा जाता है। आशा है कि वे शायद बड़े होकर समय पर याद करेंगे और अपने जीवन को सुगम बना लेंगे।

मिथिला : बिहार का गौरव

अभिषेक कुमार
वरिष्ठ लिपिक, सिगनल व दूरसंचार विभाग, मुख्यालय

मिथिला जिसे हम तिरहुत , मिथिलांचल आदि नामों से भी जानते हैं, भारतीय उप महाद्वीप का एक भौगोलिक क्षेत्र है जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है और पूर्वी गंगा के मैदानी इलाकों में फैला हुआ प्रदेश है । यह क्षेत्र आज भारत के बिहार राज्य और निकटवर्ती नेपाल के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है। यह अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत विशेषकर कला, साहित्य और धार्मिक परंपराओं के लिए जाना जाता है । मिथिला की मूल भाषा मैथिली है और इसके बोलने वालों को मैथिल कहा जाता है । मैथिली भाषा, भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में से एक है और इंडो-आर्यन उप परिवार की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। मैथिली की एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा है । इसने भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मिथिला में सात प्रमुख नदियाँ बहती हैं: गंडक, कोसी, महानंदा, बागमती, कमला, बलान और बूढ़ी गंडक। वे उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गंगा नदी तक बहती हैं।

मिथिला नाम पौराणिक राजा 'मिति' के नाम पर पड़ा है। ऐसा माना जाता है कि उनका निर्माण उनके पिता राजा निमि के शरीर से हुआ था। उन्होंने अपने राज्य की राजधानी मिथिलापुरी में स्थापित की और इसलिए इस क्षेत्र को मिथिला कहा जाने लगा। चूँकि उनका जन्म उनके पिता के शरीर से हुआ था, इसलिए उन्होंने जनक की उपाधि धारण की। इसके बाद मिथिला के राजा जनक कहलाये। सबसे प्रसिद्ध जनक, माता सीता के पिता कुशध्वज थे। मिथिला का सबसे महत्वपूर्ण संदर्भ हिंदू महाकाव्य, रामायण में है, जहां भगवान राम की पत्नी सीता के बारे में कहा जाता है कि वह इस भूमि की राजकुमारी थीं, जो जनक सुधा के नाम से जानी जाती है।

इसका एक लंबा और दिलचस्प इतिहास है, जो वैदिक काल से जुड़ा है । यह प्राचीन भारत में व्यापार और वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। माना जाता है कि यह वैदिक सभ्यता का एक प्रमुख केंद्र रहा था। महाभारत काल (लगभग 1000-500 ईसा पूर्व) के दौरान, मिथिला विदेह साम्राज्य की राजधानी थी। 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में यह बौद्ध और जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। छठी शताब्दी ईस्वी में, इस क्षेत्र पर गुप्त साम्राज्य ने कब्ज़ा कर लिया था। इस अवधि के दौरान, मिथिला कला और संस्कृति का केंद्र बन गया। अपनी अनूठी चित्रकला शैली जिसे मधुबनी पेंटिंग के नाम से जाना जाता है , के कारण यह प्रदेश ख्यातिलब्ध है।

मिथिला कला (मधुबनी पेंटिंग): पेंटिंग की इस पारंपरिक शैली की विशेषता पौराणिक विषयों, प्रकृति और रोजमर्रा की जिंदगी को दर्शाने वाले जटिल डिजाइन हैं। मधुबनी पेंटिंग ने अपने जीवंत रंगों और विस्तृत पैटर्न के लिए वैश्विक पहचान हासिल की है। इसका नाम भारत के बिहार के मधुबनी जिले के नाम पर रखा गया है, जहां इसकी उत्पत्ति हुई थी।

विशेष त्यौहार : सभी प्रमुख त्योहारों के अलावा कुछ ऐसे भी त्यौहार हैं जो सिर्फ मिथिला क्षेत्र मे मनाए जाते हैं जैसे :

1. सामा-चकहेबा: इसमें लोक रंगमंच और गीत शामिल हैं। यह भाइयों और बहनों के बीच प्यार का जश्न मनाता है । यह कृष्ण की बेटी सामा की कहानी बताती है जिस पर गलत काम का झूठा आरोप लगाया गया था। उसके पिता ने उसे पक्षी के रूप में बदल कर सज़ा दी, लेकिन उसके भाई चकेवा के प्यार और बलिदान ने अंततः उसे फिर से मानव रूप प्राप्त करने की अनुमति दी ।
2. चौरचन: यह भगवान गणेश और चंद्र देव को समर्पित है। इसका बहुत धार्मिक महत्व है। इस दिन विवाहित महिलाएं व्रत रखती हैं। प्रसाद के रूप में विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं ।
3. जितिया: यह एक तीन दिवसीय प्राचीन हिंदू त्योहार है जो अश्विन महीने में कृष्ण-पक्ष के सातवें से नौवें चंद्र दिवस तक मनाया जाता है। इसमे माताएं अपने बच्चों की भलाई के लिए (बिना पानी के) व्रत रखती हैं ।

इनके अलावा भी बहुत से त्योहार ऐसे हैं जो केवल मिथिला क्षेत्र मे मनाए जाते हैं । मिथिला क्षेत्र अपनी धार्मिक परंपराओं की वजह से विदेशों में भी प्रसिद्ध है ।

मिथिला मखाना : मिथिला मखाना एक प्रकार का नाश्ता या व्यंजन है जो पूरे भारत में लोकप्रिय है। इसे आमतौर पर भुना या तला जाता है और स्वाद बढ़ाने के लिए जीरा, हल्दी, मिर्च पाउडर या नमक जैसे विभिन्न मसालों के साथ पकाया जाता है। मखाना अपनी कुरकुरी बनावट के लिए जाना जाता है और इसकी कम कैलरी और उच्च पोषक तत्व के कारण लोग चाव से खाते हैं और यह अक्सर एक स्वस्थ नाश्ते का विकल्प है। मिथिला मखाना में मसाला या तैयारी के तरीकों में क्षेत्र की पाक परंपराओं के अनुसार विविधताएं होती हैं। यह मिथिला की तीन प्रतिष्ठित सांस्कृतिक पहचानों में से एक है: तालाब, मछली और मखान ।

मिथिला के लोगों के द्वारा अक्सर अपने क्षेत्र के बारे में गर्व से बोला जाता है :

पग-पग पोखर माछ मखान
सरस बोल मुस्की मुख पान
इ थीक मिथिलाक पहचान |

अर्थात जहाँ कदम-कदम पर तालाब, मछलियाँ और मखाना हों, जहाँ लोग सुस्वादु भाषा बोलते हों, मुस्कुराते हों और पान खाते हों, यही मिथिला की पहचान है।

रंगीला राजस्थान (राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता)

धर्मराज मीणा

वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/डिज़ाइन एवं विकास, इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

मैं राजस्थान से संबंध रखता हूं। राजस्थान मेरा गृह राज्य है। मैं अपने इस लेख में राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता पर प्रकाश डालना चाहता हूं।

राजस्थान, भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है। यहां की संस्कृति दुनिया भर में मशहूर है। राजस्थान की संस्कृति विभिन्न समुदायों और शासकों की देन है। आज भी जब कभी राजस्थान का नाम लिया जाए तो थार रेगिस्तान, ऊंट की सवारी, घूमर और कालबेलिया नृत्य और रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधान हमारी आंखों के सामने आते हैं।

अपने सभ्य स्वभाव और शालीन मेहमाननवाज़ी के लिए जाना जाता है यह राज्य। चाहे स्वदेशी हो या विदेशी, यहां की संस्कृति तो किसी का भी मन चुटकियों में मोह लेगी। आखिर किसका मन नहीं करेगा रात के वक्त रेगिस्तान में आग जलाकर कालबेलिया नृत्य देखने का। जिन्होंने राजस्थान की संस्कृति का अनुभव किया है वे बहुत खुशनसीब हैं। लेकिन जो इससे अंजान हैं उन्हें हम बताएंगे इस शाही शहर की सरल लेकिन आकर्षक संस्कृति के बारे में कुछ ऐसी दिलचस्प बातें जिन्हें जानने के बाद यहां आने के लिए खुद को रोक नहीं पाएंगे।

राजस्थानी परिधान

सभ्यता और सुंदरता को एक ही साथ जोड़ने की बात उठती हो तो राजस्थानी कपड़ों के आगे कुछ भी टिक नहीं सकता । महिलाओं के लिए पारंपरिक राजस्थानी कपड़े काफी सभ्य, सुंदर और आरामदायक होते हैं। यहां की महिलाएं पारंपरिक घागरा, लुगड़ी और ओढ़नी (दुपट्टा) पहनती हैं। महिलाओं के ये कपड़े चटक रंग के होते हैं, जिनमें गोटा (बॉर्डर) लगा होता है। अपने से बड़ों के सामने और बाहरी लोगों के आगे महिलाएं घूंघट निकाल कर रखती हैं। इस तरह से वे अपना सम्मान व्यक्त करती हैं तो वहीं पुरुष धोती कुर्ता या कुर्ता पजामा पहनना पसंद करते हैं। इसके अलावा कुछ पुरुष सिर पर बंधेज के प्रिंट वाली सूती कपड़े की पगड़ी भी पहनते हैं। उनके लिए पगड़ी , सिर ढकने वाली एक टोपी मात्र नहीं होती, बल्कि इज़्ज़त होती है।

राजस्थानी आभूषण

कपड़ों के बाद अब बात करते हैं राजस्थानी आभूषणों की जो न सिर्फ राजस्थान में बल्कि अब पूरे विश्व में मशहूर हो रहे हैं। आप यह न सोचें कि आभूषण केवल महिलाएं पहनती हैं। राजस्थान में आपको बहुत से ऐसे लोगों के गले में सोने की चेन, हाथ में पुरुषों वाली भारी सी चूड़ी और एक कान में सोने की बाली या लौंग दिखेंगे। इधर की महिलाओं के आभूषण लोक प्रसिद्ध हैं। राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध और महिलाओं द्वारा सबसे ज़्यादा पसंद किया जाने वाला आभूषण है - बोरला। बोरला एक प्रकार का मांग टीका होता है जो लट्टू जैसा दिखता है। यह राजस्थान के पारंपरिक आभूषणों में से एक है। इसके अलावा महिलाएं, कमर बंद, बाजू बंद और लाख और सीप के कंगन भी पहनती हैं।

राजस्थानी नृत्य

जहां बात राजस्थानी नृत्य की आती है सबसे पहले नाम आता है घूमर का। हां वही घूमर नृत्य जिसे आपने फिल्म पद्मावत में दीपिका पादुकोण को करते देखा था। लेकिन हकीकत में घूमर नृत्य इससे काफी अलग होता है जो ज्यादातर यहां की महिलाएं ही निपुणता से कर पाती हैं। यह नृत्य देखने में भले ही आसान लगे लेकिन करने के लिए पैरों में बहुत ताकत चाहिए होती है। इसके अलावा राजस्थान का दूसरा मशहूर लोक नृत्य है कालबेलिया नृत्य। पारंपरिक रूप से यह राजस्थान के

बंजारनों द्वारा किया जाता है। कालबेलिया नृत्य आम लोगों द्वारा नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें लोगों के मनोरंजन के लिए कई खतरनाक कर्तब भी किए जाते हैं जैसे कीलों पर खड़े होकर नाचना, आंखों से ब्लेड उठाना और एक उंगली पर थाल घुमाना। इन सब कर्तबों के लिए महीनों के अभ्यास की ज़रूरत होती है।

राजस्थान के पारंपरिक पकवान

खाने का शौकीन तो हर कोई होता है और अगर आपने राजस्थान आकर यहां का पारंपरिक खाना नहीं खाया तो बड़ी अफसोस की बात होगी। राजस्थान का दाल- बाटी और चूरमा तो देश के कोने-कोने में मशहूर है। दाल के साथ घी में डूबी गरमागरम बाटी और मीठे के तौर पर घी वाला गरमागरम चूर्मा, वाह, सोचते ही मुंह में पानी आने लगता है। वैसे तो ये आपको अपने शहर में भी मिल सकता है लेकिन असली स्वाद के लिए आपको यहीं पर आना पड़ेगा।

राजस्थान के मशहूर त्यौहार

त्यौहार तो हर राज्य, हर शहर और हर धर्म के अपने अपने जीवन से सीधे संबंध रखते हैं। राजस्थान के कुछ मशहूर त्योहार इस प्रकार हैं:-

मरु महोत्सव

जैसलमेर में होने वाले मरु महोत्सव के दौरान यहां पर मुकाबले आयोजित किए जाते हैं। यहां पुरुषों के बीच मूंछों का मुकाबला होता है और ऊंटों के खेल दिखाए और खेले जाते हैं। यह महोत्सव फरवरी में आयोजित किया जाता है।

ऊंट मेला

राजस्थान के बीकानेर में आयोजित होने वाला ऊंट मेला, हर साल रेगिस्तान के जहाज़ माने जाने वाले ऊंट के सम्मान में लगता है। इस मेले में ऊंटों को किसी दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके अलावा सभी ऊंटों के बीच दौड़ लगवाई जाती है। लोगों के मनोरंजन के लिए मेले में राजस्थानी गीत भी चलाए जाते हैं। मेले के अंत में आतिशबाजियों से पूरे आसमान को रौशन किया जाता है। बीकानेर में हर साल जनवरी में ऊंट मेला आयोजित किया जाता है।

पुष्कर मेला

पुष्कर मेला जो हर साल आयोजित किया जाता है और जिसमें तीन लाख से भी ज्यादा लोग और लगभग बीस हज़ार ऊंट, घोड़े, हाथ से बनी तरह-तरह की चीज़ें और घर सजाने की बहुत सी चीज़ों से भरी दुकानें देखने को मिलेगी। पुष्कर मेला हर साल नवंबर के महीने में पुष्कर में लगता है।

राजस्थान जाने का बेहतरीन समय

अगर आप राजस्थान जाने की प्लानिंग कर रहे हैं तो अक्तूबर से मार्च के बीच कभी भी प्लान कर सकते हैं। दरअसल इस दौरान मौसम ठंडा रहता है और रेगिस्तान की ओर से चलने वाली हवाएं भी ज्यादा गर्म नहीं होती हैं। खास बात यह है कि नवंबर, दिसंबर और जनवरी में यहां कड़ाके की ठंड पड़ती है, लिहाज़ा आपको गर्म कपड़े लेकर जाना होगा।

राजस्थान में शॉपिंग

राजस्थान जा रहे हैं तो आप शॉपिंग करना मत भूलिएगा। यहां के कल्चर और परिधानों के बारे में पढ़ने के बाद आपने अगर यहां जाने का मन बना ही लिया है, तो वहां जाने के बाद वहां की ड्रेस जरूर पहनियेगा। वो भी केवल फोटो खिंचवाने के लिए नहीं। हो सके तो अपने साथ एक खाली बैग लेकर जाइये, क्योंकि लौटते पर आपका एक बैग शॉपिंग के सामान से भर जाएगा। शॉपिंग के दौरान यहां की साड़ियां, सलवार सूट, ड्रेस मटीरियल, चूड़ीदार, कुर्ता पायजामा लेना मत भूलें। पगड़ी बांधने वाला साफा जरूर खरीदें क्योंकि यह पगड़ी आपकी शोभा बढ़ाएगी।

संयुक्त राष्ट्रसंघ

आर. इन्दुबाला
आशुलिपिक ग्रेड-I, बिजली विभाग/मुख्यालय

संयुक्त राष्ट्र एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है (United Nations- UN) जिसे 1945 में स्थापित किया गया था। वर्तमान में इसमें 193 राष्ट्र सदस्य के रूप में हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ का उद्देश्य:

विश्व शांति और विश्व कल्याण ही संयुक्त राष्ट्रसंघ का मुख्य उद्देश्य है। किसी भी संस्था की प्रस्तावना से उसके मुख्य उद्देश्यों के बारे में हम जान सकते हैं। इसलिए संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रस्तावना पर संक्षिप्त प्रकाश डालना समीचीन रहेगा।

युद्ध के प्रकोप से भावी पीढ़ियों की रक्षा करना , मानव जाति के मौलिक अधिकारों, प्रतिष्ठा, स्त्रियों और पुरुषों तथा छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों के समान अधिकार पर पुनः अपना विश्वास प्रकट करना , संधियों तथा अंतर्राष्ट्रीय विधि के अन्य स्रोतों से उत्पन्न होने वाले दायित्वों के सम्मानजनक और न्यायपूर्ण पालन हेतु आवश्यक स्थिति उत्पन्न करना तथा बड़े पैमाने पर सामाजिक प्रगति, उच्चतर जीवन-स्तर और पर्याप्त स्वतन्त्रता को प्रोत्साहित करना आदि के बारे में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रस्तावना में उल्लेख किया गया है। यह भी कहा गया है कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सहिष्णुता का मार्ग अपनाया जाएगा ताकि विश्व शांति बनी रहे और अंतर्राष्ट्रीय शांति-व्यवस्था बनाये रखने के लिए एकजुट रखा जाएगा। जनहित को ध्यान में रखते हुए सशस्त्र शक्ति का प्रयोग नहीं किया जाएगा तथा लोगों के सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए अंतर राष्ट्रीय संस्थाओं की सेवाओं का लाभ उठाया जाएगा ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य:

शुरु-शुरु में संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य के रूप में ऐसे राष्ट्र थे जिन्होंने अप्रैल 1945 के सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लिया था। इसके पश्चात् संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर में नवीन सदस्यों को शामिल करने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई। इसके बाद शांतिप्रिय, अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के कुशल अनुयायी और इन उत्तरदायित्वों को पूरा करने की क्षमता रखने वाले राष्ट्र इसके सदस्य बने । एक राष्ट्र, नवीन सदस्य तभी बन सकता है जब सुरक्षा परिषद अपनी बहुमत (इस बहुमत में पांचों स्थायी सदस्यों का मत एक होना आवश्यक है) से उनकी सिफारिश करे और जनसभा अपने 2/3 बहुमत से सदस्यता का प्रस्ताव पास कर दे । संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्यता में महाशक्तियों का हाथ है। अमेरिका साम्यवादी सिद्धांत वाले राज्यों को और सोवियत संघ पूंजीवादी विचारधारा के राज्यों को संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्यता से वंचित रखना चाहते हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के उद्देश्य:

संयुक्त राष्ट्रसंघ का मुख्य ध्येय संसार में युद्ध को समाप्त करना है और विश्व में शांति व्यवस्था की स्थापना करना, अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाना और विश्व कल्याण आदि भी इसके उद्देश्यों में शामिल हैं। संक्षेप में इसके उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(1) सदस्य राष्ट्रों में होने वाले पारस्परिक विवादों को शान्तिपूर्ण ढंग से निपटाना और यथासंभव युद्ध की संभावनाओं को कम करना और संसार में शांति तथा व्यवस्था बनाए रखना।

(2) विश्व के समस्त राज्यों के बीच सहयोग और भाईचारे की भावना को जागृत करना। ऐसे कार्यों को प्रोत्साहित करना जिनसे राज्यों में मित्रता बनी रहे और आपसी विवादों का निपटारा भी किया जा सके।

(3) आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं को सुलझाना तथा पिछड़े राष्ट्रों के विकास में सहायता करना भी संयुक्त राष्ट्रसंघ का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। सभी तरह के समुदायों को समान अधिकार प्रदान करना संघ का महत्वपूर्ण कार्य है।

(4) विभिन्न राष्ट्रों को एक प्लेटफार्म उपलब्ध कराना है ताकि वे वहाँ पर एकत्रित होकर आपसी भेदभावों को निपटा सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति करते समय संयुक्त राष्ट्रसंघ निम्नलिखित मूल सिद्धांतों का पालन करेगा-

(1) छोटे-बड़े राष्ट्रों को समानाधिकार प्रदान करेगा तथा प्रत्येक राज्य की सम्प्रभुता का सम्मान करेगा।

(2) सदस्य राष्ट्र के चार्टर के सिद्धान्तों का पालन करेगा।

(3) ऐसी व्यवस्था करेगा कि सभी राष्ट्र अपने विवाद शांतिपूर्ण ढंग से सुलझा सके।

(4) चार्टर के प्रतिकूल आचरण करने वाले राज्य की किसी भी प्रकार की सहायता न करेगा।

(5) संयुक्त राष्ट्रसंघ के उद्देश्यों की अवहेलना कभी भी नहीं करेगा।

(6) किसी राष्ट्र के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करेगा।

(7) जो राष्ट्र संघ के सदस्य नहीं हैं उनसे भी शांति तथा व्यवस्था बनाये रखने वाले सिद्धान्तों का पालन कराना।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में नये राष्ट्र कैसे सदस्य बन सकते हैं :

वर्तमान समय में विश्व के प्रायः सभी देश संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य हैं। इन सब ने इसके चार्टर पर हस्ताक्षर किए हैं तथा संयुक्त राष्ट्र ने भी इनका अनुसमर्थन किया है। वर्तमान चार्टर में दिये गये सिद्धांतों को स्वीकार करने वाले नए राष्ट्र भी सदस्यता प्राप्त कर सकते हैं। सुरक्षा परिषद की स्वीकृति और महासभा में निर्णय होने पर ही कोई राष्ट्र संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्यता प्राप्त कर सकता है। अतः महासभा व सुरक्षा परिषद् का इसमे अहम् भूमिका है।

भाषाएँ:

संयुक्त राष्ट्र ने 6 भाषाओं को "राजभाषा" के तौर पर स्वीकृत किया है (अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ़्रांसीसी, रूसी और स्पेनिश) । संघ की स्थापना के समय, केवल चार राजभाषाएँ स्वीकृत की गई थीं (चीनी, अंग्रेजी, फ़्रांसीसी, रूसी) और बाद में 1973 में अरबी और स्पेनिश को भी जोड़ा गया था। इन भाषाओं के बारे में विवाद चलते रहते हैं। कुछ लोगों का विचार है कि राजभाषाओं की संख्या 6 से घटा कर 1 (अंग्रेजी) कर देनी चाहिए, लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि राजभाषाओं की संख्या बढ़ानी है। हिन्दी को भी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के पक्ष में विवाद चल रहा है।

संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी:

संयुक्त राष्ट्र में किसी भाषा को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिए जाने के लिए कोई विशिष्ट मानदण्ड नहीं है। किसी भाषा को संयुक्त राष्ट्र में आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल करने हेतु

संयुक्त राष्ट्र की महासभा में साधारण बहुमत द्वारा एक संकल्प पारित किया जाना है। इसके पश्चात संयुक्त राष्ट्र की कुल सदस्यता की दो तिहाई बहुमत द्वारा उसे अन्तिम रूप से पारित करना है।

भारत बहुत समय से यह प्रयास कर रहा है कि हिन्दी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में शामिल किया जाए। भारत का तर्क यह है कि हिन्दी, विश्व में बोली जाने वाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा है और यह विश्व भाषा के रूप में स्थापित भी हो चुकी है। आज का भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र राष्ट्र होने के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी मजबूत होता जा रहा है। अतः भारत का यह दावा और अधिक मजबूत हो जाता है ।

संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक रेडियो वेबसाईट पर हिन्दी भाषा में भी प्रसारण किया जाता है। कई अवसरों पर भारतीय नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र की सभा में हिन्दी में वक्तव्य दिए हैं । 1977 में महासभा के 32वें अधिवेशन के दौरान श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने, सितम्बर 2014 में प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने, अक्तूबर, 2015 में तत्कालीन विदेश मन्त्री स्व.सुषमा स्वराज ने और सितम्बर, 2016 में विदेश मन्त्री श्री जयशंकर ने हिंदी में सभा को सम्बोधित किया है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ का संगठन:

अपने कार्यों को निपटाने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ में कई विंग होते हैं। कुल मिलाकर संघ के 6 अंग हैं- महासभा , सुरक्षा परिषद, आर्थिक व सामाजिक परिषद, न्यास परिषद, सचिवालय और अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (General Assembly, Security Council, Economic & Social Council, Trusteeship Council, Secretariat and International Court).

महासभा :

महासभा, संयुक्त राष्ट्रसंघ की सबसे महत्वपूर्ण संस्था है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र, इसके सदस्य है। इसमें सदस्य राष्ट्रों को 5- 5 प्रतिनिधि तथा वैकल्पिक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है। लेकिन प्रत्येक राष्ट्र के सदस्य का मत एक ही माना जाता है। वर्ष में इसका केवल एक ही अधिवेशन होता है। किन्तु महामंत्री, सुरक्षा परिषद् अथवा संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्यों की बहुमत पर सभा का विशेष अधिवेशन बुला सकते हैं। सामान्यतः इसका अधिवेशन दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित किया जाता है। महासभा के अधिवेशन में अध्यक्ष और उपाध्याक्षों का चुनाव किया जाता है।

सुरक्षा परिषद:

सुरक्षा परिषद को संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर में सबसे अधिक महत्व प्रदान किया गया है। विश्व शान्ति को बनाये रखने के संयुक्त राष्ट्रसंघ के मुख्य उद्देश्य में इसकी मुख्य भूमिका होती है। संघ का मानना था कि जब बड़े राष्ट्रों में आम सहमति हो तभी विश्व शान्ति कायम हो सकती है । इस उद्देश्य से उन्हें वीटो (Veto) निषेधाधिकार प्रदान किया गया है। इसके स्थाई सदस्य इस अधिकार का दो तरफा उपयोग कर सकते हैं और कर भी रहे हैं।

आर्थिक व सामाजिक परिषद:

राष्ट्र संघ में आर्थिक व सामाजिक कार्यों का उत्तरदायित्व राष्ट्रसंघ की कौंसिल और असेम्बली के पास है , परन्तु उसके अधिकांश सदस्य राजनीतिक नेता प्रशासकीय या कूटनीतिक कर्मचारी होते हैं। अतः आर्थिक सामाजिक समस्याओं की ओर वे ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते हैं। तथापि राष्ट्रसंघ अपने कल्याणकारी और गैर राजनीतिक कार्यों में अधिक सफल रहा है।

सचिवालय:

सचिवालय में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एवं हज़ारों संयुक्त राष्ट्र कर्मचारी सदस्य शामिल होते हैं, जो महासभा और संगठन के अन्य प्रमुख अंगों द्वारा बताए अनुसार संयुक्त राष्ट्र के दिन-प्रतिदिन के कार्यों को संभाल लेते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय:

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय संयुक्त राष्ट्र का प्रमुख न्यायिक अंग है। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर द्वारा जून 1945 में इसकी स्थापना की गई थी और अप्रैल 1946 से इसने कार्य करना शुरू किया था। इससे पहले इसे अंतर्राष्ट्रीय न्याय के स्थायी न्यायालय के नाम से जाना जाता था जिसकी स्थापना राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 1920 में की गई थी।

इस प्रकार देखा जाए तो विश्व शांति को बनाए रखने में संयुक्त राष्ट्रसंघ की अहम् भूमिका होती है। फिर भी विकसित राज्य जो इसके स्थाई सदस्य हैं अपने विशेष अधिकार का प्रयोग करते हुए इसके कार्यों में बाधा डालते हैं और यह संगठन ऐसे मामलों में शक्तिहीन ही साबित होता है। जिसकी लाठी, उसकी भैंस वाली बात ही आखिर साबित होती है।

लालची मंत्री(कहानी)

सर्वेश कुमार निगम
वरिष्ठ अनुवादक/मुख्यालय

पुराने समय की बात है। कटकु राज्य में एक बौना रहता था। उसकी ऊंचाई 18 इंच थी। वह बहुत बुद्धिमान था। किंतु शारीरिक अक्षमता के कारण लोग उस पर हंसते थे। उसे कोई काम करने नहीं दिया जाता था। राज्य के लोगों का व्यवहार बौने को पसंद नहीं था किंतु गरीबी और विवशता के कारण वह अपमान सहता रहता था। एक दिन अपनी गरीबी और लोगों के व्यवहार से तंग आकर बौने ने अपने देश के राजा से सहायता मांगने का निश्चय किया।

अगले ही दिन सुबह उठकर वह अच्छे से तैयार होकर और इत्र वगैरह लगाकर वह राजमहल की ओर निकल गया। राजमहल उसके घर से काफी दूर था। अतः जाने से पहले उसने पूरी तैयारी की, किंतु जाने के लिए उसके पास कोई सवारी वाहन नहीं था। उसने सोचा कि राजमहल की ओर जाता कोई व्यक्ति उसकी सहायता करेगा और वह आसानी से राजमहल तक पहुंच पाएगा। किंतु हुआ इसके विपरीत। जब भी वह राजमहल की ओर जाते किसी व्यक्ति से कोई सहायता

मांगता तो वह बौने पर हंसता, उससे मसखरी करता और आगे चला जाता। इस प्रकार रात हो गई। वह सोना चाहता था लेकिन डर था कि अगर किसी पेड़ के नीचे सोया तो कोई अन्य यात्री या जानवर उसे कुचल सकता है। इसी डर से उसने एक पेड़ के ऊपर चढ़कर रात गुजारने का निश्चय किया। तभी सड़क से कुछ दूर एक उसे एक आम का पेड़ दिखाई दिया। उसे भूख भी बहुत जोर की लगी थी। अतः दौड़ते हुए वह पेड़ के नीचे पहुंचा। पेड़ के नीचे कुछ पके आम गिरे पड़े थे। बौना बहुत खुश हुआ और उसने जी भर कर आम खाये। पेट भरने के लिए दो आम ही काफी थे। बाकी आमों को उसने अगले दिन खाने के लिए पोटली में बांध लिया और पेड़ पर चढ़कर सो गया। उस पेड़ पर एक बंदर रहता था। बह बंदर बूढ़ा और बीमार था। बंदर अजनबी और अजीब से इंसान को देखकर डर गया और बौने को भगाने के लिए खिखियाने लगा। किंतु बौने ने हिम्मत नहीं हारी और अक्ल से काम लेते हुए उस बंदर के सामने अपने साथ लाए हुए केले और चने रख दिए। बंदर समझ गया कि बौना उसे किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने नहीं आया है। बंदर ने बौने द्वारा दिए गये केले और चने खाए। कुछ ही देर में बंदर और बौना दोनों में गहरी दोस्ती हो गयी। बौने ने बंदर को बताया कि वह राजमहल जा रहा है किंतु राजमहल बहुत दूर है ओर वहां तक पैदल जाने में कई दिन लग जाएंगे। इस पर बंदर ने बताया कि जंगल में एक घोड़ा रहता है, जो रोज इस पेड़ के नीचे आता है और मेरे द्वारा गिराए पत्ते और फल खाता है। अब बौने ने इस घोड़े को पकड़ने का विचार किया और जैसे ही घोड़ा चरने आया, बौना कूदकर घोड़े के ऊपर चढ़ गया। घोड़ा बहुत बिगड़ा किंतु बौना घोड़े से न उतरा और घोड़े को कसकर पकड़े रहा । धीरे-धीरे बौने ने घोड़े के ऊपर काबू पा लिया। वह घोड़े की अच्छी तरह से देखभाल करने लगा। धीरे-धीरे घोड़ा पालतू बन गया। कुछ दिन तक वहां रहने के बाद बौने ने बंदर से विदा ली और घोड़े पर बैठकर राजदरबार की ओर चल दिया। कुछ दिन चलने के बाद वह राजदरबार पहुंच गया।

दरबार में पहुंचने पर सभी द्वारपाल और दरबारी उस पर हंसने लगे। फिर एक मंत्री ने बताया कि राजा साहब शिकार पर गये हैं कल आएंगे। उसे रुकने के लिए एक छोटी सी कोठरी दे दी गई जिसमें चौकी जितनी बड़ी एक खटिया थी। एक छोटी सी सुराही में पानी रखा हुआ था। कोठरी छोटी जरूर थी पर बौने के रहने के लिए पर्याप्त थी। बौने ने देखा कि सभी लोग बड़े कमरों में रह रहे हैं किंतु उसे एक कोठरी दी गई है। राजा से मिलने की इच्छा और कोई अन्य रास्ता न होने के कारण उसने उस कुटिया में रहने का निश्चय किया और जाकर कुटिया में सो गया। उसने देखा कि मंत्री उसको दी जाने वाली सुविधाओं में बौना कहकर कटौती कर देता है। उसे यह पक्षपात बहुत बुरा लग रहा था। एक दिन राजा से उसकी भेंट कराई गई। राजा ने भी इतना छोटा आदमी पहली बार देखा था। अतः उसे भी बौने पर हंसी आ गयी किंतु अपनी हंसी को रोकते हुए उसने बौने से वहां आने का कारण पूछा तो बौने ने अपनी गरीबी और कोई काम न होना बताया और राजा को बताया कि बौना होने के कारण सभी उसके साथ पक्षपात करते हैं और उसे कोई काम करने नहीं देते। राजा को बौने पर दया आ गई और उसने मंत्री से कहा कि वह बौने को एक गाय दे दे जिसके दूध से वह अपना और अपने परिवार का गुजर-बसर कर सके, किंतु मंत्री ने सोचा कि बौने को गाय की क्या जरूरत, इसके लिए एक दुर्बल भैंस ही बहुत है। ऐसा सोचते हुए एक मरियल भैंस दे दी। । बौने का मन इस पक्षपात पूर्ण रवैये से बहुत खिन्न हो गया। उसने सोचा था कि राजा उसे कुछ पैसे और कुछ हृष्ट-पुष्ट गाय-भैंस देगा। रास्ते भर वह क्रोध की आग में जलता रहा और उस भैंस को लेकर अपने घर पहुंच गया।

उसने भैंस को एक खूंटे से बांध दिया और उसे कुछ भी खाना या पानी नहीं दिया। कुछ ही दिनों में वह भैंस भूख-प्यास से मर गई। उसने उस भैंस का चमड़ा निकाल लिया और उसे बेचने के लिए शहर की ओर निकल पड़ा। रास्ते में एक घना जंगल पड़ता था। चलते-चलते शाम हो गई। उसने सोचा कि यदि वह नीचे कहीं सोता है तो वह किसी न किसी जानवर का अवश्य शिकार हो जाएगा। यदि शिकार होने से बच भी गया तो किसी जानवर के पैरों से कुचलकर मारा जाएगा। यह सोचकर वह एक पेड़ के ऊपर चढ़कर सो गया। रात को कुछ चोर उस पेड़ के नीचे आए और अपने चोरी के धन का बंटवारा करने लगे। किंतु अपने धन का सही से बंटवारा नहीं कर पाने के कारण वे आपस में लड़ने लगे। बौना चोरों की बातें सुन रहा था। उसे चोरों पर हंसी आयी। इसी बीच बौने ने करवट बदली ऐसा करते ही उसके ऊपर पड़ी भैंस की खाल आवाज के साथ नीचे गिर गयी। चोरों ने जैसे ही पेड़ से काली और बड़ी चीज नीचे गिरती देखी तो वे डर गये और अपना सारा धन छोड़कर वहां से भाग गये। बौना जब सुबह उठा तो उसने पेड़ के नीचे बहुत सा धन पड़ा देखा। उसने उस खाल में सब धन लपेटा और अपने घर चला आया। घर आकर उसने अपना छोटा घर तुड़वाकर उस स्थान पर एक अच्छा सा और बड़ा घर बनवाया और घर में कुछ नौकर-चाकर लगाकर सुखपूर्वक रहने लगा।

उसके इस ऐशो-आराम को देखकर कुछ लोगों ने राजा के मंत्री को बताया तो मंत्री ने बौने को अपने घर बुलाया और उसकी समृद्धि का कारण पूछा। बौने ने बताया कि महाराज आपने ही तो हमें एक भैंस दी थी,जोकि रास्ते में चलने से मर गई। मैं ने तो बस उसकी खाल को शहर में बेचा है। शहर में भैंस की खाल की बहुत मांग है। बस आपकी दया से ही हमें इतने धन की प्राप्ति हुई है। मंत्री लालच में आ गया। उसने सोचा कि मैंने तो उसे एक मरियल भैंस ही दी थी। इस भैंस से उसने इतना धन कमा लिया और मेरे पास तो सैकड़ों गाय-भैंस हैं। इसी विचार में पूरी रात बीत गई। सुबह होते-होते उसने अपनी सभी भैंसो को मारने का मन बना लिया। लालची मंत्री ने अपनी सभी भैंसे मार दी और खाल निकाल कर शहर की ओर निकल गया। रास्ते भर वह रातों-रात अमीर बनने का ख्वाब देखता रहा। शहर पहुंच कर वह एक स्थान पर खड़ा हो गया और भैंस की खाल ले लो, खाल ले लो कहकर जोर- जोर से आवाज देने लगा। किंतु कई घंटों तक कोई भी ग्राहक उसकी ओर नहीं आया। बहुत देर के बाद एक बूढ़ा आदमी आया और बोला कि 5 रुपए में वह सभी खाल ले सकता है। यह सुनते ही मंत्री को झटका लगा और उसे अपने ठगे जाने का अहसास हो गया। फिर भी संभल कर बोला कि क्या बकवास करता है तू, लाखों की खाल का केवल 5 रुपए ही दे रहा है। इस पर वह बूढ़ा आदमी उसे पागल कहकर चला गया। अब वह फिर से भैंस की खाल ले लो, खाल ले लो कहकर जोर-जोर से आवाज देने लगा। किंतु पूरा दिन कोई भी खाल खरीदने न आया। इसी तरह वह दूसरे दिन भी भैंस की खाल लिए खड़ा रहा पर कोई भी भैंस की खाल खरीदने को राजी न था और जो दो- चार ग्राहक आते वह 5 रुपए से 10 रुपए में ही खाल का दाम लगाते। अंत में परेशान होकर उसने 10 रुपए में ही सभी खालें बेच दीं। मंत्री को पूरा यकीन हो गया कि उस बौने ने उसे मूर्ख बनाया है। वह अपने लालच पर बहुत शर्मिंदा था और वह भली भांति समझता था कि यदि वह इसके बारे में किसी से कहेगा तो वह केवल हंसी का पात्र बनेगा। अब वह मन ही मन उस बौने पर बहुत क्रोध करने लगा। उसका बस चलता तो वह उसे तुरंत ही मार देता। वह रास्ते भर उस बौने को सबक सिखाने का प्लान बनाता रहा।

अपने राज्य में पहुंचते ही उसने अपने लोगों को भेजकर उस बौने के घर में आग लगवा दी। अपना घर जलता देखकर बौना बहुत रोया किंतु वह कर भी क्या सकता था। दूर खड़ा अपने घर को जलता देखता रहा और एक छोटी गाड़ी में अपने घर की राख भरी और उसे कपड़े से ढ़क कर गांव से कहीं दूर जाने का निश्चय करके चल दिया। कई दिनों की यात्रा के बाद एक दिन वह एक वीरान जंगल से गुजर रहा था। तभी एक बूढ़ी औरत उसकी ओर बढ़ी और उससे सहायता मांगी। उस बुढ़िया ने बताया कि वह अंगुल देश की रानी है किंतु सेनापति ने गद्दारी करके उसके राज्य को हड़प लिया है और वह छिपकर जंगल में ही कहीं रहना चाहती है। बौने ने रानी की पूरे मन से मदद की और जंगल में रानी के लिए घर बना दिया। इस घर पर अपने साथ लाई राख और कुछ मिट्टी डालकर ऐसे छिपा दिया कि यह आसानी से दिखायी न दे । रानी उसकी इस कलाकारी से बहुत खुश हुई और उसने बौने को बहुत सा धन देकर विदा किया । अब बौना फिर अपने गांव आ गया। अबकी बार उसने पहले से अच्छा घर बनवाया। उसमें रानी द्वारा दिए गए बहुमूल्य मोती और माणिक्य जड़वा दिये। धीरे-धीरे बौने की ख्याति बढ़ने लगी । लोग उसकी अमीरी की चर्चा करने लगे।

कुछ ही दिनों में मंत्री के कानों में भी बौने की ख्याति की बातें पड़ने लगीं। मंत्री का लालच फिर से जाग गया। उसने फिर से पता लगाना शुरू कर दिया कि बौना इतना अमीर कैसे हुआ। वहीं बौने ने कुछ लोगों के द्वारा मंत्री को खबर पहुंचा दी कि उसने अपने मकान की राख बहुत मंहगे दामों में शहर में बेची है और शहर में मकान की राख बहुत ऊंचे दामों में बिकती है। मंत्री के लालच ने उसके दिन-रात का चैन खराब कर दिया। एक दिन उसने निश्चय किया कि वह अपने महल को जलाकर उसकी राख शहर में बेचेगा। एक रात जब सब लोग सो रहे थे उसने अपने महल में आग लगा दी और रात के तीसरे पहर में ही उसका पूरा महल धूं-धूं कर जलने लगा और धीरे- धीरे राख में बदल गया। मंत्री ने सुबह होने के पहले ही सारी राख इकट्ठा की। महल बड़ा होने के कारण राख सात बड़ी गाड़ियों में भरी और वह उसे बेचने के लिए शहर निकल गया। पहले की ही तरह अमीरी के विचारों में खोया वह शहर की ओर बढ़ने लगा। वह उड़कर शहर पहुंचना चाहता था। इसी धुन में अपने घोड़ों को तेजी से दौड़ाता और राख गिर जाने के भय से कांपकर कभी धीरे हो जाता। इसी प्रकार कभी धीरे और कभी तेज चलते वह देर रात शहर पहुंचा। उसने रास्ते भर न तो खुद ही कुछ खाया पिया और न ही अपने घोड़ों को कुछ खाने पीने को दिया और न ही रास्ते में कहीं आराम किया। अब शहर पहुंचते ही जैसे घोड़ों को खोला तो भूख प्यास से बेहाल और थके घोड़े खाने - पीने के लिए इधर-उधर चरने निकल गए और मंत्री जी अपनी कीमती राख की रखवाली में लग गये। उसे डर था कि कहीं उसकी राख की चोरी न हो जाये। इसी बेचैनी में सारी रात कट गयी। सुबह होते ही उसने आपने घोड़ों को फिर से गाड़ी में बांधा और गली- सड़क राख ले लो, राख मकान की राख - महल की राख- चिल्लाने लगा। बच्चे उसे इस तरह राख बेचते देख हंसते और मजे लेते। किंतु राख लेने कोई नहीं आया। उसने मन में विचार किया कि निर्धन मोहल्लों में लोगों के पास इतना पैसा ही कहां होगा कि वे मेरी राख खरीद सकें और हां, इन भिखमंगों को मैं अपने महल की राख छूने भी न दूंगा। ऐसा सोचकर वह ऐसे मोहल्ले में पहुंच गया जहां उस शहर के सेठों के मकान व महल थे । वहां पहुंच कर फिर से राख ले लो, राख मकान की राख - महल की राख - चिल्लाने लगा। तभी किसी सेठ ने अपने महल के पास बने गड्ढे को भरने के लिए उसे बुलाया और कहा कि 20 रुपए ले और पूरी राख इस गड्ढे में डाल। इस पर मंत्री ने कहा सेठ मजाक क्यों करते हो , करोड़ों की राख को मात्र 20 रुपए बता रहे हो । तब सेठ ने कहा बावले हुए हो क्या, बताओ राख का कोई क्या करेगा, इसे तो केवल जमीन में डाला जा सकता है। अब मंत्री की हालत ऐसी कि काटो तो खून नहीं। थका-हारा उदास मंत्री दिन भर राख ले-ले लो राख चिल्लाता रहा पर किसी ने

राख न खरीदी। अंत में उसने सेठ के घर जाकर राख डाल दी और 20 रुपए लेकर उससे कुछ अपने लिए घोड़ों के लिए खाना खरीदा। अपनी मूर्खता और घर को जलाने की पीड़ा के कारण वह हताश हो गया और अपनी सुध-बुध खो बौठा। शीघ्र ही उसकी अपनी मूर्खता और पीड़ा धीरे-धीरे क्रोध में बदलने लगी। वह क्रोध से पागल हो गया और उस बौने को जान से मारने का षडयंत्र करने लगा। इस विचार के साथ वह फिर गांव पहुंच गया। उसने सोचा अबकी बार मैं अवश्य ही उस बौने की जीवन-लीला समाप्त कर दूंगा, तभी मुझे शांति मिलेगी।

वहीं उस गांव में बौने की बुद्धिमता की चर्चाएं होने लग गयी थीं। वह राजा का भी कृपा पात्र हो गया था। सीधे-सीधे जाकर हत्या करना राजा से दुश्मनी मोल लेना था । मंत्री ने एक योजना बनाई और अपने एक भरोसेमंद सैनिक को बुलाया और कहा कि वह रात को बौने के घर जाए और बोले कि राजा ने उसे बुलाया है और उसे लेकर राजा के महल की ओर चले और जब भी एकांत मिले तब उसे एक बोरे में बंद करके गांव के बाहर की नदी में डाल आये। इस प्रकार बौने की मृत्यु हो जाएगी और किसी को कोई शक भी नहीं होगा। इस काम के लिए सैनिक को मुंह मांगी कीमत दी गई। एक दिन मौका पाते ही योजनानुसार सैनिक बौने के घर पहुंचा और कहा कि राजा साहब एक बड़ी पहेली में उलझ गये हैं इसलिए उन्होंने इसके समाधान के लिए आपको बुलाया है। बौने ने देखा कि वह राजा का ही सैनिक है। अतः राजा का आदेश सुनते ही वह उसके साथ जाने के लिए राजी हो गया। जब कुछ एकांत पाया तो सैनिक ने बौने को पकड़ लिया। एक ओर बौना और दूसरी तरफ एक लंबा-चौड़ा राजा का सैनिक। बौने का कोई विरोध काम न आया। जब बौने ने चिल्लाने की कोशिश की तो सैनिक ने बौने के मुंह में कपड़ा ठूंस कर और पट्टी बांध दी। अब बौना कुछ बोल भी नहीं सकता था। फिर सैनिक ने बौने के हांथ-पैर अच्छे से बांध दिए और सामान की तरह कंधे पर डालकर राज्य के बाहर की ओर बहने वाली नदी की ओर चल दिया। सैनिक को बार-बार मंत्री की बात याद आ रही थी कि बौना बहुत चालाक है और इसे फेंकने में कोई गलती नहीं होने देना है। इसलिए उसे लगा कि किसी प्रकार गठरी को नदी के बीच में फेंकना है, लेकिन नदी के बीच जाने की कोई युक्ति नहीं सूझ रही थी। सोचा कि यदि एक झौवे का इंतजाम हो जाए तो उस पर बैठकर इस गठरी को नदी के बीच तक ले जा सकता । अति सतर्कता के कारण वह उसे किनारे फेंकना नहीं चाहता था। इसी विचार के साथ सैनिक बौने की गठरी को झाड़ी में डालकर इस पर कुछ और झाड़ी डालकर कुछ दूर बने झोंपड़े की ओर चल दिया। झोंपडे पर जाकर सैनिक ने दरवाजा खटखटाया तो एक अधेड़ उम्र के आदमी ने दरवाजा खोला। सैनिक ने उससे बताया कि राजा का आदेश है और कुछ सामान नदी के दूसरे किनारे पहुंचाना है, अतः कोई नाव या एक झौवे की व्यवस्था की जानी होगी। उस आदमी के पास एक छोटी सी नाव थी जिसमें बमुश्किल दो लोग जा सकते थे। आदमी बहुत गरीब था और वह अपनी नाव देने से डर रहा था। पर राजा का आदेश जो ठहरा, वह मना भी नहीं कर सकता था। उसने सैनिक को अंदर बुलाया, उसे जल-पान कराया और बोला कि मैं भी साथ चलूंगा जिससे नौके की रखवाली भी होगी और आपकी सहायता भी। सैनिक शुरू में राजी न था लेकिन समय हो रहा था, अतः आदमी की बात मान ली। सैनिक खुश था और सोचने लगा कि जल्द ही अपना काम पूरा हो जाएगा और बौने को बीच नदी में फेंककर मंत्री से खूब पुरस्कार प्राप्त कर लूंगा और अमीर बन जाऊंगा। इसी विचार में वह फिर बौने वाली गठरी की ओर बढ़ा।

इसी बीच जहां बौना था वहां चरते-चरते कुछ गाय-भैंस पहुंच गये और हिलती गठरी को देखकर भागने लगे। एक चरवाहा उत्सुकतावश झाड़ी के पास आया । कुछ झाड़ियां वहां से हटायीं तो उसे एक

हिलता बोरा नजर आया। चरवाहे को बहुत आश्चर्य हुआ कि बोरा कैसे हिल रहा है। वह और पास गया तो बोरे से कुछ आवाज आ रही थी। उसे लगा कि इस बोरे में कोई जानवर बंद है। और पास गया तो उसे लगा कि कोई इंसान बोरे के अंदर है। उसने बोरे को खोला तो अंदर से बौना बाहर निकल आया। चरवाहे ने बौने का मुंह खोला तो बौने को बच निकलने की उम्मीद दिखने लगी और उसने अपने आप को बचाने के लिए बहुत जल्द एक युक्ति बना ली। मुंह खोलकर जब चरवाहे ने बौने से उसके बारे में पूछा तो बौने ने कहा कि वह पास के राज्य का राजकुमार है और नदी पार के राज्य की राजकुमारी ने उसे शादी का पैगाम भेजा था किंतु उसने मना कर दिया। बौने ने आगे बताया कि मैं बौना इतनी सुंदर राजकुमारी से कैसै शादी कर सकता हूं। साथ ही बौने ने राजकुमारी की सुंदरता की इतनी प्रशंसा की और उसकी सुंदरता का ऐसा वर्णन किया कि चरवाहा भी राजकुमारी पर मोहित हो गया। बौने ने चरवाहे से कहा कि तुम सब प्रकार से राजकुमारी के योग्य हो, आगर तुम राजकुमारी से शादी करोगे तो दोनों बहुत खुश रहोगे और शादी के बाद तुम्हे राजकुमारी का राज्य भी मिल जाएगा। अब चरवाहे के मन में लालच भर गया। वह राजकुमारी से शादी करने के ख्वाब देखने लग गया। तब बौने ने कहा कि यदि तुम मेरी जगह इस बोरे में बैठो तो सैनिक मेरे स्थान पर तुम्हें ले जाएंगे और वहां का राजा तुम्हें राजकुमार समझ कर राजकुमारी से तुम्हारी शादी करा देगा। चरवाहा राजी हो गया बौने ने चरवाहे के हांथ- पैर ठीक उसी तरह बांध दिए जिस प्रकार उसके बंधे थे और उसे बोरे में बैठाकर बोरे को ठीक से ऊपर से बांध दिया और कहा कि किसी भी हालत में बोरे के अंदर से कुछ न बोलना। चरवाहे ने ठीक वैसा ही किया। बौने ने फिर से उसी तरह से उस बोरे पर झाड़ियां डाल दीं जैसे कि पहले पड़ी थीं। अब बौने को जल्द से जल्द वहां से भागना था। अतः बौना वहां से कुछ दूर खड़े एक छायादार पेड़ के ऊपर चढ़ कर बैठ गया। थोड़ी ही देर में उसने देखा कि सैनिक और साथ में एक और आदमी आ रहा है। उनके साथ एक छोटी नाव भी थी। सैनिक की निगाह तो गठरी पर ही थी। उसे डर था कि कहीं बौना आजाद न हो जाये। आदमी नदी में नाव तैयार करने लगा और सैनिक गठरी की ओर बढ़ चला। जैसे ही गठरी दिखी सैनिक ने संतोष की सांस ली और उसके मुख पर कुटिल मुस्कान छा गयी किंतु जैसे ही उसने गठरी उठाने की कोशिश की तो उसे गठरी भारी लगने लगी। ताकत लगाकर उसने गठरी निकाली और ठीक से देखा वही गठरी और वैसे ही ठीक से बंधी थी। लेकिन उसे आश्चर्य था कि गठरी भारी हो गयी है कुछ ज्यादा फूली भी लग रही है किंतु शक का कोई सवाल न था सब कुछ वैसा ही तो था। सैनिक ने फिर गठरी को उठाया तो कभी लगा कि गठरी भारी है कभी सोचता कि थकान के कारण ऐसा लग रहा है। इसी उधेड़-बुन में उसने गठरी नाव पर चढ़ा दी। कुछ दूर जाते ही नाव हिलने लगी, सैनिक ने सोचा कि यहां तो ठीक-ठाक पानी है, अतः गठरी वहीं फेंककर वापस आ गया।

वह अपने काम से बहुत खुश था। सैनिक के जाने के बाद बौना पेड़ से उतरा। चरवाहे के गाय-भैंस इकट्ठा किया। कुछ दिन वहीं नदी के किनारे झोंपड़ा बना कर रहने लगा। गाय-भैंसों की अच्छी सी सेवा की और नदी पार दूध बेचकर कुछ पैसे कमाये और अपने लिए अच्छे कपड़े बनवाये। जब कुछ धन इकट्ठा हुआ तो कुछ और गाय - भैंस भी खरीद लीं। अब उसके पास काफी संख्या में गाय-भैंस थीं। अच्छी सेवा के कारण सभी मोटी ताजी और तंदरुस्त दिखती थीं। वहीं खूब घी-दूध के सेवन और आराम से रहने के कारण बौना भी कुछ मोटा और चुस्त दिखने लगा। कुछ दिन बाद बौने को अपने मित्रों और परिवार जनों की याद आने लगी। बौने ने पुनः अपने गांव जाने का निश्चय किया और एक सुबह अच्छे से तैयार होकर गले में माला, पैरों में पादुका और गमछा डालकर अपनी गाय-भैंसों के साथ अपने गांव की ओर चल दिया। दिन निकलते-निकलते वह गांव पहुंच गया। गांव वाले उसे देखकर उसके पास आकर पूछे तो वह बोला कि सब मंत्री जी की कृपा है, उन्हीं के कारण मैं इतना धन और गाय - भैंस पा सका हूं। धीरे-धीरे यह बात मंत्री जी

के कानों में पड़ी। मंत्री जी आग बबूला हो गये और तुरंत ही उस सैनिक को तलब किया। सैनिक ने कहा कि उसने तो बौने को नदी में फेंका था। दोनों में काफी बहस हुई, पर सैनिक अपनी बात पर कायम था। बार-बार पूछने पर सैनिक ने साक्षी के रूप में उस आदमी की गवाही भी दिलायी जिससे उसने नाव व सहायता प्राप्त की थी। अब अविश्वास का तो प्रश्न ही न था। मंत्री ने स्वयं ही इस मामले की तह तक जाने का निर्णय लिया और अपने कई विश्वास पात्रों को बौने के आस-पास रहने और उस पर निगाह रखने को कहा। बौने से जब भी कुछ पूछा जाता वह मंत्री जी की तारीफ ही करता और अपनी कामयाबी का श्रेय भी मंत्री जी को देता। एक दिन मंत्री जी ने बौने को अपने पास बुलाया और उसका बहुत आदर सत्कार किया और उससे पूछा कि इतना धन और पशुधन कैसे प्राप्त किया और कहा कि वह भी ऐसी ही गाय-भैंस खरीदना चाहता है। इस पर बौने ने कहा कि महाराज सब गाय- भैंस आपकी ही तो हैं। आपकी कृपा से ही मुझे मिली हैं। आप जो कहें तो मैं स्वयं आपके घर बांध जाऊंगा। आपने मुझे इतनी अच्छी जगह का पता बताया है कि मैं कुछ दिन यहां रहकर फिर गो-लोक चला जाऊंगा और हां, इस बार आप हमें नदी में थोड़ा बीच में डलवाना जिससे मैं और अच्छी गाय भैंस प्राप्त कर सकूं। मंत्री को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। वह जितना सोचता विचारों में उतना ही उलझ जाता। मंत्री बौने को किस्मत वाला समझने लगा। वहीं दूसरा मन मंत्री से कहता ऐसा नहीं हो सकता। मगर लालच तो लालच, यह लालच मंत्री को बौने की बात मानने पर मजबूर करने लगी।

एक दिन मंत्री ने सीधे बौने से पूछा कि उसे तो नदी में डाला गया था फिर वह कैसे बच गया। बौना इसी प्रश्न की तलाश में था। बौने ने कहा मंत्री जी यही तो आपकी महानता है कि आपने मुझ जैसे बौने की गरीबी पर दया खाकर इतनी अच्छी जगह भेजा जिसका किसी को पता ही नहीं है। अब भी मंत्री को कुछ समझ न आ रहा था। मंत्री जी के बार-बार पूछने पर बौने ने बताया कि इस नदी के नीचे गो-लोक है वहां अच्छा खाना, कपड़ा, धन सब मौजूद है। उसने आगे कहा कि मंत्री जी सैनिक ने मुझे नदी के किनारे गिराया था यदि बीच में गिराता तो वहां तो और ज्यादा गाय-भैंसो का स्थान है। वहां जो भी जाता है उसकी इतनी आव-भगत की जाती है कि मन प्रसन्न हो जाए। बौने ने कहा कि उसने तो इतने दिन केवल मक्खन ही खाया यद्यपि वहां लड्डू-पेड़ा, हलवा सब था। शरीर की मालिश के लिए पहलवान भी थे । वहां तो बस खाओ, सोओ और अपना बदन दबवाओ और कोई काम ही नहीं। बौने की बात सुनकर मंत्री को भी वहां जाने की चाहत जाग उठी और उसने जाने का निश्चय किया। बौने ने मंत्री को बताया महाराज आप नदी के बीच में ही जाइयेगा, वहीं पर सबसे अच्छे मवेशी उपलब्ध हैं और हां वहां बोरे में ही जाना पड़ता है। अब क्या था, मंत्री ने अपने सबसे विश्वास पात्र सैनिकों को बुलाया और कहा कि वह नदी के बीच में जाना चाहता है अतः उसे बोरे में बंद कर नदी के बीच में डाल दिया जाए। मंत्री पुनः नदी के अंदर की सुख-सुविधाओं पर विचार करता रहा कि इतने में सैनिकों ने उसे बोरे में बांध दिया और नदी की धार के बीचों बीच गिरा दिया।

शिक्षा- अधिक लालच बुरी बला है।

सदैव संयमित रहना चाहिए और बुद्धि से काम लेना चाहिए। लालच ऐसी बला है जो ज्यादातर मनुष्यों में कभी न कभी जाग्रत हो ही जाती है। आज के जमाने में भी यह जारी है। कुछ ठग इसका फायदा उठाकर लोगों का बैंक एकाउंट भी खाली कर देते हैं। इसी के वशीभूत होकर सब जानते हुए लोग अपनी निजी जानकारी अजनबियों के साथ शेयर कर देते हैं । यही नहीं, आर.बी.आई और बैंकों के इतने विज्ञापन पढ़ने के बाद भी ओ.टी.पी शेयर करते हैं। कभी सस्ते सामान या सस्ता सोना खरीदने की लालच में अपनी जीवन भर की पूंजी लुटा देते हैं। लगता है कि यह सिलसिला जारी रहेगा। वाकई लालच बुरी बला है।

अब दांपत्य रिश्ते क्यों नहीं रह पाते टिकाऊ

रूपा मंडल
कनिष्ठ अनुवादक, सेलम मंडल

पति और पत्नी के बीच का पवित्र रिश्ता इस दुनिया में सबसे खूबसूरत और स्थायी संबंधों में से एक है। पति-पत्नी का रिश्ता परस्पर विश्वास एवं समर्पण की भावना पर टिका होता है। इसमें जितना अधिक विश्वास और समर्पण भावना होगी यह उतना अधिक मजबूत होता चला जाएगा। विश्वास और समर्पण की कमी होने पर ही रिश्तों को ताश की पत्तों की तरह बिखरने या फिर कांच की तरह चकनाचूर होने में समय नहीं लगता है। पति- पत्नी के रिश्ते में सम्मान और जिम्मेदारी के संतुलन की भी आवश्यकता होती है। अगर यह संतुलन थोड़ा सा भी डांवांडोल हुआ तो रिश्तों को रेत की तरह बिखरने से कोई नहीं बचा सकेगा। आजकल के वैवाहिक जीवन में इसी तरह की कमियां देखने को मिल रही हैं जिनके कारण बहुत सारे वैवाहिक रिश्ते टूट रहे हैं और इसके पीछे कई कारण और विपरीत परिस्थितियां जिम्मेदार होती हैं।

सबसे प्रमुख कारण , पति-पत्नी दोनों में अहम भाव का होना है। आज की नारी स्वतंत्र नारी है और वह अपनी आजादी की राह की हर रुकावट को तोड़ने के लिए बेताब है । इस दौड़ में उसे कोई रोक भी नहीं सकता है। पत्नी की यह आजादी पति के गले नहीं उतरती। वह यह तो चाहता है कि उसकी पत्नी नौकरी या कोई काम-धंधा कर रुपये पैसा कमा कर लाए, ताकि वह सुख-सुविधा की हर चीज जुटा सके और सोसाइटी में अपना रुतबा बढ़ा सके, अपना जीवन स्तर ऊंचा कर सके, परन्तु वह यह कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी उसके हुक्म से बाहर चले, उसे घर पर पत्नी के साथ घरेलू कामों में हाथ बंटाना पड़े। अर्थात् वह अधिकार तो चाहता है परन्तु कर्तव्य मुक्त रहना चाहता है । इसी प्रकार वह यह तो चाहता है कि उसके महिला-मित्र हों जिनका झूठा दम्भ वह सोसाइटी के सामने भरता। अपनी सह-महिला कर्मियों के साथ खूब बतियाएं या मजाक करें परन्तु इसके विपरीत अपनी पत्नी का ऐसा करना उसे फूटी आँख नहीं सुहाता।

ऐसा नहीं है कि पत्नी में अहम का भाव नहीं है। पत्नी जब पति के समकक्ष या अधिक शिक्षित हो, अथवा उसके मायके का सामाजिक-स्तर, ससुराल से उच्च हो तथा वह संस्कार-हीन हो तो वह पति पर रौब चलाने लगती है जो पति के पुरुष-अहंकार पर चोट करता है। अगर वह पुरुष के समान पद और सोसाइटी में रुतबा हासिल कर ले तो उसमें यह भावना आ जाती है कि वह अपना जीवन अकेले जी सकती है और अपने परिवार का पालन पोषण स्वयं कर सकती है। परिवार के छोटे-बड़े मामलों का निर्णय खुद लेना शुरू कर देती है। पत्नी द्वारा पति को सम्मान न देना तथा अपशब्दों का उपयोग करना आदि जैसे के कारण दांपत्य जीवन में कलह उत्पन्न होता है और वैवाहिक रिश्ता टूटने के कगार तक आ जाता है। आदमी अपने अहम को कम नहीं कर सका है और दूसरी ओर महिला अपने को एक दम उन्मुक्त करके जीने की इच्छा करने लगी है । वास्तव में देखा जाए तो दांपत्य में अहम की भावना और उन्मुक्तता चिर रोग की तरह धीरे-धीरे संबंध को खा जाते आ रहे हैं। जहां प्यार होना चाहिए था वहां भावना बंजर जमीन सरीखी हो जाती है ।

दूसरा प्रमुख कारण एक दूसरे के परिवार वालों का इनके दांपत्य जीवन में दखलअंदाजी करना। ससुराल के हर सदस्य का ख्याल रखना पत्नी की जिम्मेदारी बन जाती है। उससे अपेक्षा की जाती है की वह चूल्हा -चौका से लेकर हर छोटे-बड़ों की इज्जत करें, दिन भर सबकी फरमाइशों को पूरा करने के साथ-साथ पति की भी सेवा करें। इसके विपरीत छोटी सी गलती होने पर पति के साथ -साथ घर के सभी सदस्यों द्वारा उसको औकात दिखाना कि तुम सिर्फ घर की चार दिवारी के लिए बनी हो, उसकी व्यथा बढ़ाता है। उसके निजी जीवन में किस तरह चलना, उठना - बैठना, कपड़े पहनने के ढंग, खाना खाने के तरीके आदि पर परिवार के सदस्यों द्वारा टीका -टिप्पणी की जाती है। पति के ईर्ष्यालु परिवार-जन , छोटी - छोटी बातों का बतंगड़ बनाकर पति-पत्नी के बीच मनमुटाव पैदा कर देते हैं। यह सिर्फ एक पक्ष की बात नहीं बल्कि दूसरा पक्ष लड़की के मायके का भी यही हाल होता है । पत्नी का मायके के प्रति अनावश्यक झुकाव होना, पत्नी द्वारा हर बात में अपने मायके की प्रशंसा करते हुए ससुराल वालों को हेय दृष्टि से देखना आदि भी चलता है। लड़की की मां द्वारा रोज फोन करके पूछा जाता है कि - क्या खाया, क्या बनाया, किसने बनाया सब तुम्ही काम क्यों करती हो , तुम्हारी सास जेठानी देवरानी क्या करती हैं, दुबली हो गई हो। ये सब दांपत्य जीवन के टूटने के कारण बनते हैं।

कई बार पति-पत्नी में एक-दूसरे को समझने की भावना की कमी भी अलगाव का कारण बन जाती है। एक दूसरे की पसंद- नापसंद का ख्याल न रखना, एक दूसरे की जरूरतों को न समझना या उन्हें पूरा न करना एवं एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना का न होना भी पति-पत्नी के टूटते रिश्तों का एक छोटा परन्तु अति महत्वपूर्ण कारण है। जब पत्नी निराश है और अपनी समस्याओं के बारे में बात करना चाहती है, लेकिन पुरुष दूर जाना चाहता है तो उनके बीच का फासला बढ़ जाता है। यदि वह अपने पति को अपनी कुंठाओं के बारे में बता रही है तो पुरुष को ऐसा लगता है मानो वह उस पर या उसके परिवार पर दोष लगा रही हो। लेकिन वास्तव में होता है कि वह केवल संचार के माध्यम से अपना तनाव दूर कर रही है। पुरुषों के विपरीत जब महिलाओं को किसी भी समस्या का सामना करना पड़ता है, तो वह अपने मन में आने वाली हर बात पर अपने पति से चर्चा करना चाहती है चाहे वह सिर्फ कान से उसकी बातों को सुने। लेकिन पति को इसके लिए समय ही नहीं होता तो वह दुखित हो जाती है । ऐसा भी देखा गया है कि पत्नी कितना भी योग्य क्यों न हो पुरुष उन्हें सम्मान देना तो दूर मित्रों, रिश्तेदारों के सामने पत्नी का अपमान कर देता है। अगर पत्नी खूबसूरत न हो तो सास -ससुर को तो जैसे लाइसेंस ही मिल जाता है यह कहने का कि इसे छोड़ क्यों नहीं देता, इतनी तो सुंदर भी न है, चाहे पत्नी नौकरी पेशा वाली हो या फिर हाउस वाइफ । उसकी व्यथा तब बढ़ जाती है जब इतना सुनने के बाद भी पति अपने मां-बाप का ओब्जेक्शन नहीं कर पाता, यह तक नहीं कह पाता कि यह तो मेरी जीवन साथी है।

पति-पत्नी के रिश्ते में कहा जाता है कि पति अपनी पत्नी की खुशी, सम्मान और अपमान के लिए स्वयं ही जिम्मेदार होता है। कोई भी अच्छी पत्नी नहीं चाहती कि वह अपने पति को गुलाम बनाकर रखे

बल्कि यह चाहती है कि पति के परिवार के सदस्यों का जितना आदर और सम्मान वह करती है , उतना आदर सम्मान उसके परिवार को भी मिले।

इस रिश्ते को और सुगम बनाने के लिए कई तरीके हैं जैसे घरेलू कार्यों में दोनों समान रूप से हाथ बंटा सकते हैं, कार्यों को आपस में इस प्रकार से बांट सकते हैं कि किसी एक पर बहुत अधिक बोझ न पड़े। अवकाश के दिनों में पति को भी चाहिए कि घर की साफ-सफाई और मेंटेनेंस वाले कार्यों पर भी ध्यान दें। यदि पति-पत्नी दोनों कामकाजी हैं तो उन्हें अपने अहम को एक तरफ रखकर परिवार, रसोई, अन्य घरेलू काम आदि की जिम्मेदारियां मिल-बांटनी चाहिए। समस्या तब उत्पन्न होती है जब पति को लगता है कि यह उसका काम नहीं है जैसा कि उसने अतीत में ये सारे काम अपनी मां- दादी को करते हुए देखा है। इसमें एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस प्रकार लड़कियों के मन में महिला सशक्तिकरण का बीज बोया गया उसकी तुलना में लड़कों के विचार बदलने के प्रयास नहीं किए गए हैं।

जिस तरह पति, पत्नी की खुशियों के लिए जिम्मेदार है ठीक उसी तरह सफल दांपत्य जीवन और असफल दांपत्य जीवन ज्यादातर पत्नी पर भी निर्भर होता है। वैदिक साहित्य में पत्नी को पति के घर में सर्वोपरि स्थान दिया गया है। जैसा कि ऋग्वेद का कथन है " पत्नी ही घर है" । प्रकृति ने नारी को पुरुष के पूरक रूप में बनाया है। एक के बिना दूसरे का जीवन अपूर्ण है। पत्नी बनकर नारी पुरुष की सहधर्मिणी एवं अर्धांगिनी बनती है और अपने दांपत्य जीवन की सार्थकता पाती है। पति -पत्नी दोनों के सहयोग से ही दांपत्य जीवन का सफर पूरा होता है। अतः पत्नी को भी चाहिए कि एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें। पत्नी को चाहिए कि अगर पति को कुछ स्पेस की जरूरत है और वह समस्या के बारे में चर्चा नहीं करना चाहता है तो उसे कुछ समय के लिए छोड दें। इसका मतलब दोस्त से बात करना, टीवी देखना, कंप्यूटर देखना,ऐसा कुछ भी हो सकता है जिसे वह दैनिक कामकाज की गतिविधियों से दूर रहना पसंद करता है।

जहां तक मेरा विचार है इस रिश्ते को बनाए रखने की जिम्मेदारी दोनों की है। पति और पत्नी दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। दोनों एक रथ के दो पहिए की तरह हैं। यदि एक पहिया किसी कारण डगमगा जाए तो रथ आगे चल नहीं पाता। पति-पत्नी के रिश्ते में कोई बड़ा या छोटा नहीं होता है, चाहे दोनों की उम्र में कितना भी अंतर क्यों न हो। ऐसा होता है कि केवल पति ही पत्नी से सम्मान की इच्छा रखते हैं और पत्नी को सम्मान नहीं मिलता है। दरअसल, पति-पत्नी का रिश्ता तभी सफल कहलाता है, जब दोनों के मन में एक दूसरे के लिए बराबर सम्मान हो। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे का सम्मान के हकदार होते हैं क्योंकि जिस रिश्ते में सम्मान होता है वह रिश्ता सबसे खूबसूरत होता है।

खुशहाल वैवाहिक जीवन के लिए दोनों के बीच संवाद होना बहुत जरूरी होता है। इससे गलतफहमी से बचे रहने में मदद मिलती है। अगर पति और पत्नी दोनों के बीच संवाद में कमी आती है या फिर बातचीत बंद हो जाती है तो संबंधों में दूरियाँ आ जाती हैं। इसलिए किसी भी परिस्थिति में आपस में बातचीत करते रहना बहुत ही जरूरी है। वैवाहिक जीवन में कड़वाहट तब पैदा होती है जब पति-पत्नी एक दूसरे को समय देना बंद कर देते हैं। ऐसी कड़वाहट से बचने के लिए दोनों को एक दूसरे को समय देना

चाहिए। दोनों एक दूसरे की बातें सुनें और अहमियत दें, वही मायने रखता है । किसी भी विषय पर पति-पत्नी दोनों को एक साथ मिलकर फैसला लेना चाहिए। आज के समय में महिलाओं और पुरुषों में कोई अंतर नहीं है। पति के साथ-साथ अब पत्नी भी ऑफिस जाती है। ऐसे में घर के कामों के लिए महिलाओं के पास ज्यादा समय नहीं बच पाता, जिस वजह से उनका मन चिड़चिड़ा होने लगता है। ऐसी स्थिति में रिश्ते में दरार पड़ सकती है। इसलिए बेहतर होगा कि दोनों साथ मिलकर घर के काम करें, ताकि किसी एक पर अधिक भार न पड़े और अंत में अगर पति से कोई गलती हो तो पत्नी उसे सही कर दे और अगर पत्नी से कोई गलती हो जाए तो पति उसे ठीक कर दे। यही सुखी, शांत और सफल जीवन का सूत्र है।

जिसे आप बना नहीं सकते उसे नष्ट न करें

वा.पूर्ण कामेश्वरी

आशुलिपिक,परिचालन विभाग, मुख्यालय

हंगेरी के वैज्ञानिक *लियो सिलार्ड* (Leo Szilard) ने कहा है- '*जिसे आप बना नहीं सकते उसे नष्ट न करें*'।

यह वाक्य मुझे बारबार तब याद आया जब हमें यह खबर मिली थी कि हमारे जान पहचान के व्यक्ति का रेल गाड़ी के नीचे आकर मृत्यु हुई। मैं इस खबर से बिल्कुल टूट गयी। अगले दिन समाचार पत्रों में यह समाचार आ भी गया। सभी समाचार पत्रों ने इसे दुर्घटना बताया। परंतु हम सबको निश्चित रूप से पता था कि यह दुर्घटना नहीं बल्कि आत्महत्या है क्योंकि वे अक्सर जीवन समाप्त करने की बात करते रहते थे, और जीवन से हताश भी थे। हां, उन्होंने जान तो गंवाई है, लेकिन इससे मैं बहुत चिंताग्रस्त हो गई जिसके कारण मैं आत्मविश्लेषण करने लगी हूँ।

मेरे आत्मविश्लेषण से मुझसे प्रश्न किया गया कि क्या यह आत्महत्या थी, जैसा कि बताया गया था। उनके आस-पास के और जान पहचान के सभी लोगों को उनकी समस्याओं की जानकारी थी , हमने उन्हे कई तरह की सलाह दी, लेकिन किसी ने मदद नहीं की । उन्हे असहाय स्थिति की ओर धकेल दिया गया। उन्होंने अपना जीवन समाप्त करने का निर्णय लिया । मानसिक रूप से निराश व्यक्ति को मुफ्त सलाह की नहीं, सहारे की जरूरत होती है।

उसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उसे उन विचारों से बाहर निकाल सके। खैर, हमने वह नहीं किया। भारत में, दुर्भाग्यवश मानसिक बीमारी की अनुमति कभी नहीं दी जाती। किसी को शारीरिक रूप से बीमार होने की अनुमति है और उसकी खूब देखभाल की जाती है। लेकिन अगर वह मानसिक रूप से पीड़ित है, तो उसे अपने आप झेलना होता है। मुझे यह बात सताती रही कि हमने उस व्यक्ति को जानबूझकर खो दिया। वह बार-बार हम सभी को बताता रहा कि वह जीना ही नहीं चाहता। उसको जिंदगी बहुत बोझिल लगने लगी थी। लेकिन इन बातों को हम सभी लोगों ने कभी भी गंभीर रूप से नही लिया। इसीलिए मैंने मानसिक बीमारी से पीडित लोगों की सहायता के तरीकों पर लिखना पसंद किया।

आत्महत्या के कारणों पर विचार करते समय हम देख सकते हैं कि आत्मघाती विचार की सीमा क्षणभंगुर विचारों से लेकर विस्तृत योजना तक फैली रहती है। अवसाद और अन्य मनोदशा विकार इसके कारण हो सकते हैं। जीवन की घटनाएँ और पारिवारिक घटनाएँ आत्महत्या के विचार को बढ़ा सकती

हैं। आत्महत्या अक्सर निराशा के चलते की जाती है, जिसके लिए अवसाद, द्विध्रुवीय विकार, मनोभाजन, शराब की लत या मादक दवाओं का सेवन जैसे मानसिक विकारों को जिम्मेदार ठहराया जाता है। तनाव के कारक जैसे वित्तीय कठिनाइयां या पारस्परिक संबंधों में परेशानियों की भी अक्सर एक भूमिका होती है। आत्महत्या को रोकने के लिए मानसिक बीमारी का उपचार करना तथा नशीली दवाओं के उपयोग को रोकना तथा आर्थिक विकास को बेहतर करना जैसे प्रयास किए जा सकते हैं।

जापान में सामुराई युग में, सेप्पुकू(आत्म हत्या) को विफलता का प्रायश्चित या विरोध का एक रूप माना जाता था। सती, जो अब कानूनन निषिद्ध है हिंदू दाह संस्कार है, जिसमें पति की चिता पर विधवा खुद को बलि चढ़ाती थी।

आत्महत्या और आत्महत्या का प्रयास दोनों ही पहले आपराधिक रूप से दण्डनीय अपराध माने जाते थे लेकिन पश्चिमी देशों में अब ऐसा नहीं है। बहुत से मुस्लिम देशों में यह आज भी दण्डनीय अपराध है।

मेरे जान-पहचान के और एक दोस्त हैं जो 59 वर्षीय व्यक्ति हैं। उनका जीवन असफलताओं से भरा था । वे न कोई अच्छी नौकरी कर पाए न ही अच्छे दोस्त बना पाए । उनकी पत्नी की भी हाल ही में मृत्यु हो गई। इतने वर्षों में उनके अवसाद की गंभीरता अलग-अलग रही। वह लंबे समय से उदास मनोदशा की स्थिति में जीवित रहते थे। उनके मुह से बारबार यह सुनने को मिलता था कि मैं आत्महत्या कर लूंगा। जब दोस्तों ने उनसे बात की तो उन्होंने कहा, "मुझे अपने भविष्य के लिए कोई आशा नहीं दिखती।

यह मामला तीन महत्वपूर्ण नैतिक प्रश्न प्रस्तुत करता है। पहले दो का संबंध इस बात से है कि आशा विकसित करने के लिए एक उपयुक्त चिकित्सा पद्धति क्या हो सकती है और तीसरे का संबंध इस बात से है कि उनके आसपास के लोगों को उनके प्रति कैसे उन्मुख होना चाहिए।

इस मामले में आत्महत्या के चिंतन और तनाव को कम करने के वैकल्पिक तरीकों पर विचार करके उसके आधार पर एक तर्कसंगत विकल्प ढूंढ निकालना अत्यंत आवश्यक है। आवेगी बनाम विचारशील रोगी की सापेक्ष स्वायत्तता पर विचार करते समय यह महत्वपूर्ण है कि यह मनोचिकित्सक के हस्तक्षेप करने के निर्णय को कैसे प्रभावित कर सकता है और क्या आत्महत्या को एक उचित विकल्प माना जा सकता है। एक आवेगशील रोगी स्वायत्तता के बिना आत्महत्या करने का निर्णय लेता है, अर्थात, उसका निर्णय आंतरिक रूप से नियंत्रित होता है और प्रभावित होता है और इसका कारण मतिभ्रम जैसी बीमारी के तीव्र लक्षण हो सकता है। मतिभ्रम के परिणामस्वरूप वास्तविकता का एक विकृत दृष्टिकोण सामने आता है जो ऐसे रोगियों को उनकी कार्रवाई, उनकी कार्रवाई के परिणामों, या यहां तक कि उन कारणों को समझने के मामले में निष्क्रिय बना लेता है। आवेगपूर्ण आत्महत्या के खतरे में एक रोगी को मनोचिकित्सीय प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। चिकित्सा के बाद तीव्र लक्षण ठीक हो जाते हैं तो रोगी संभवतः अन्यथा सोचेगा और कार्य करेगा।

मेरे दोस्त के शब्दों को लें तो "मुझे अपने भविष्य के लिए कोई उम्मीद नहीं दिखती।", इसमें आशा को केंद्र बिंदु के रूप में पहचाना गया जिसकी उनमें कमी थी। मनोचिकित्सक का अगला कदम क्या हो सकता है? क्या उसे आशा को ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए? *एक चिकित्सीय रणनीति के रूप में यथार्थवाद के साथ आशा का तड़का लगाना होगा*। उन्हे रोगी को राहत की आशा के लिए प्रोत्साहित करके उसे आत्महत्या के विचार से छुटकारा दिलाने की कोशिश करनी चाहिए।

आत्महत्या के जोखिम को प्रभावित करने वाले कारकों में मानसिक विकार, औषधि दुरुपयोग, मानसिक अवस्थाएं, पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियां शामिल हैं। मानसिक रोग और नशीले पदार्थों का सेवन हमेशा आपस में संबंधित होते हैं। पूर्व में किए गए आत्महत्या के प्रयास, ऐसा करने के लिए

साधनों की आसान उपलब्धता, आत्महत्या का पारिवारिक इतिहास या घातक मस्तिष्क चोट भी इसके कारण हो सकते हैं। बेरोजगारी, गरीबी, बेघर होना जैसे- सामाजिक और आर्थिक कारक भी आत्महत्या के विचारों को पैदा कर सकते हैं।

आत्महत्या की प्रवृत्ति का शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं के साथ सीधा सम्बन्ध रहता है जैसे पुराने दर्द, मस्तिष्क की चोट और जान लेवा बीमारियां। एक से अधिक रोग से ग्रस्त व्यक्तियों में आत्महत्या का जोखिम विशेष रूप से ऊँचा होता है। जापान में स्वास्थ्य समस्याओं को आत्महत्या के प्राथमिक औचित्य के रूप में माना जाता है। नींद संबंधी समस्याएँ भी इसके कारण बन सकते हैं।

निराशा, जीवन में आनन्द की कमी, अवसाद तथा व्यग्रता आदि जैसी मनोवैज्ञानिक अवस्थाएं आत्महत्या के खतरे को बढ़ाती हैं । समस्याओं को हल करने की क्षमता की कमी तथा आवेग की स्थिति में नियन्त्रण में कमी भी इसमें अहम भूमिका निभाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों के उपचार के माध्यम से कई प्रकार के जोखिम को कम कर सकते हैं। इन्हे उनकी अपनी इच्छा से या बलपूर्वक चिकित्सा के लिए भर्ती करा सकते हैं। इस चिकित्सा में ऐसे लोगों को हानि पहुंचाने वाली बाधाओं को हटा सकते हैं।

हालाँकि, जानबूझकर की गई आत्महत्या, ऑन्कोलॉजी, एंडोक्रिनोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, या न्यूरोलॉजी के रोगियों द्वारा हर दिन लिए जाने वाले उन निर्णयों से बहुत अलग नहीं हो सकती है, जो असहनीय पीड़ा का अनुभव करते हैं और इलाज प्रक्रिया से तंग आकर सुगम अंत हेतु रास्ता खोजने का तर्कसंगत निर्णय लेते हैं। उदाहरण के लिए ओरेगॉन में, डेथ विद डिग्निटी एक्ट इसके लिए कानूनी स्वीकृति देती है । इससे गंभीर रूप से बीमार रोगियों को इच्छा मृत्यु(Euthanasia) हेतु स्वीकृति मिलती है।

हालाँकि कुछ कोशिशों या असफल आत्महत्याओं के मामले में परिवार के सदस्यों और मित्रों को पहले से कोई अनुमान नहीं होता है, पर कई लोग पूर्व-चेतावनियाँ देते हैं। व्यक्ति के सामान्य व्यवहार पैटर्न में कोई भी बदलाव जैसे मनोदशा, व्यवहार, नींद प्रणाली में किसी भी परिवर्तन पर ध्यान दिया जाना है। चूँकि आत्महत्या की प्रवृत्ति वाले अधिकांश लोग अक्सर अपने विचारों और व्यथाओं के बारे में बात नहीं करते हैं, अतः यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि लोग जो बातें करते हैं वे उनकी निराश होने, अभिभूत होने, फँसे हुए होने या दूसरों के लिए बोझ होने की भावनाओं का संकेत तो नहीं करती हैं। व्यवहार के परिवर्तनों में सामान्य गतिविधियों से दूर रहना, क्रोधित होना, चिड़चिड़ापन, मदिरापान या दवाओं का सामान्य से अधिक इस्तेमाल करना, अपनी चीज़ों को बाँट देना जैसे अजीब व्यवहार शामिल हैं। आत्महत्या के विचारों के किसी भी उल्लेख, चाहे मज़ाक के लिए भी क्यों न हो , को गंभीरता से लेना चाहिए। इसको नज़रअंदाज़ करने से एक जीवन समाप्त हो सकता है।

आत्महत्या की रोकथाम के लिए कई नई व्यापक सार्वजनिक नीतियाँ एवं तरीकों को अपनाया जा रहा है। आत्महत्या की रोकथाम के लिए स्कूलों और कार्यस्थलों में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं की सेवाओं का लाभ उठाया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में सुधार हेतु मानसिक स्वास्थ्य सेवा के अंतर्गत प्राथमिक देखभाल क्लिनिकों और आपातकालीन विभागों में आत्महत्या के जोखिम कम करने वाले नैदानिक तरीके अपनाए जाते हैं।

मेरा तो यही विचार है कि मनुष्य खुद को जन्म नहीं दे सकता या खुद को पैदा नहीं कर सकता, इसीलिए खुद को मिटाने का भी उसे कोई हक नहीं है चाहे उसकी स्थिति जितनी भी गंभीर क्यों न हो।

******

राजनीतिक और प्राकृतिक तापमान (कविता)

विकाश कुमार शर्मा

कार्यालय अधीक्षक, सामग्री प्रबंधन विभाग, पेरंबूर, मुख्यालय

एक तरफ राजनीति का तापमान चढ़ा है,
दूसरी तरफ प्रकृति भी सब के पीछे पड़ा है।
सभी पार्टियाँ अपनी मेनिफेस्टो जारी करते,
नेता जी मंच से भाषण देते, लोक लुभावन वादा करते ।
जनता के असली मुद्दे तो गौण हो जाते,
सभी विपक्षी दल एकजुट हो हमलावर हो जाते।
बड़े नेता - मंत्री जी तो चलते वातानुकूलित कार से,
जनता को कोई फर्क नहीं पड़ता, चुनाव के जीत हार से।
जनता को कोई फर्क नहीं पड़ता, चुनाव के जीत हार से।

प्रचंड गर्मी से मच गया है हाहाकार;
धूप में ही बच्चे जा रहे हैं विद्यालय, देखती रही बेचारी सरकार।
विद्यालय तो घर से दूर है पर जाना जरूर है
उच्च अधिकारियों का फरमान है
ना जाएं तो शिक्षक का अपमान है।

अम्बर से आग बरसाती
धरती से धौंक निकलती
कोई मूर्छित होकर गिरते
किसी के मुंह तो किसी के कंठ सूख जाते
अप्रैल माह में गर्मी की छुट्टी देते
मई माह में बच्चों को विद्यालय बुलाते
बच्चे अस्पतालों में जब भर्ती होने लगते
तब मंत्री जी होश में आते
समाचार चैनलों पर लाइव आते
विद्यालयों में पठन-पाठन स्थगित कर देते
बच्चों की तो बात छोड़िए, वयस्क भी बेहाल हैं
सम्पूर्ण परिवार के भूख मिटाने का जो सवाल है
घर से तो निकलना ही पड़ेगा,
धूप में कार्य तो करना ही पड़ेगा
ना कमाए तो क्या खाए?
पत्नी बच्चे सब पर संकट जो छा जाए
हो जाएंगे दो रोटी के मोहताज
रखना तो पड़ेगा ही परिवार का लाज

बिहार में कहीं प्राकृतिक तापमान 47 के पार है तो
दिल्ली में 52 डिग्री पार है।
चढ़े राजनीतिक तापमान में कहते सभी, अबकी हमारी पार्टी का बेड़ा पार है
बन रही हमारी सरकार है।

माँ

धर्मवीर
आरक्षी, रेसुब, सुरक्षा विभाग, मुख्यालय

कब्र की आगोश में जब थक के सो जाती है माँ।
तब कहीं जाकर जरा थोड़ा चैन पाती है माँ ।।

रूह के रिश्तों की ये गहराइयाँ तो देखिए ।
चोट लगती है हमारे और चिल्लाती है माँ।।

जब परेशानी में घिरे हैं हम परदेश में।
आंसुओ को पोंछने, ख्वाबों में आ जाती है माँ।।

चाहे हम खुशियों में माँ को भूल जाए दोस्तो।
जब मुसीबत सर पे आ जाए तो याद आती है माँ ।।

लौटकर वापस सफर में सर को सहलाती है माँ।
डालकर बाहें गले में प्यार से नहलाती है माँ।।

शुक्रिया हो ही नहीं सकता कभी उसका अदा।
मरते-मरते भी दुआ जीत की दे जाती है माँ ।।

मरते दम बच्चा न आ पाए अगर परदेश से।
अपनी दोनों पुतेलियाँ भी चौखट पर रख जाती है माँ ।।

प्यार कहते है किसे और ममता क्या चीज है।
ये तो उन बच्चों से पूछो जिनकी चल बसी है माँ।।

भगता परब

तारकेश्वर महतो
तकनीशियन ग्रेड-I, डीजल लोको शेड़, ईरोड़

भगता परब को अनेक क्षेत्रीय नामों से भी जाना जाता है जैसे :- बिसु परब, मण्डा परब, चड़क पूजा, गाँजन परब आदि । बिसु परब झारखंड, उड़िसा, पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु आदि में बुढ़ा बाबा की सबसे कठोर परब मानी जाती है ।

बिसु परब मधुमास के तीसरे पहर के आखिरी पख में मनाया जाता है । यह मूलतः झारखंड के आदिवासी, आदिम जनजाति, कुड़मि जनजातियों के परब है परन्तु वर्तमान में आदिवासी समुदाय के साथ-साथ सदानों में भी प्रचलित है और इसे पूरे धूमधाम से मनाया जाता है। इस परब में बुढ़ाबाबा और महामाँय की पूजा-अर्चना बुढ़ाथान (मंडप) में होती है ।

बिसु परब सरहूल के संजोत (नहान-खान) दिन से ही प्रारंभ होता है । इस परब में सखुआ पेड़ की अहम भूमिका है । सखुआ पेड़ का खूँटा, पाटा, डाँडि आदि साल भर तालाब में डुबा कर रखी जाती है और परब के प्रारंभ होते ही तालाब से खोजकर बाहर निकाली जाती है । सखुआ लकड़ी का अतिविशेष गुण होता है कि पानी में न सड़ता है, न गलता है बल्कि और अधिक मजबूत एंव टिकाऊ हो जाता है ।

इस परब में उपवास रखने वाले पुरुष को "भोगता" एंव महिला को "सोखताइन" कहा जाता है । 5, 7, 9 दिन के लिए जिसकी जैसी सुविधा हो, भगता परब के लिए भगतिया घुसते रहते हैं । मंडा / गांजन परब और नटुआ नृत्य का घनिष्ठ संबंध है । पारंपरिक परब व नटुआ नृत्य एक दूसरे के पूरक हैं । कहा जाए तो आजकल मंडा / गांजन परब और नटुआ नृत्य के मूल स्वरूप और उदेश्यों से हम भटक गये हैं । वर्तमान समय में हम करते सब कुछ हैं और समझते कुछ नहीं है। गांजन परब अपने पूर्वजों के स्मरण में सम्पन्न करते हैं, साथ ही मृत्यु क्रिया की सभी रीति-रिवाज-नियमों का अनुपालन भी करते हैं । इस महान झारखण्डी संस्कृति (परब) को खास कबिलाई गुष्टि व जनजाति ही मनाते और आस्था रखते हैं । भगतिया घुसने के बाद मोरखी घाट का मान पालन करना पड़ता है, जैसे -

(1) जमीन पर सोना है ।
(2) लहसून, प्याज, मांस, मछली इत्यादि नहीं खाना है ।
(3) हाथ में बेंत/लोहा रखना है ।
(4) भगतिया की पत्नी सिंदूर नहीं लगाती, गहने नहीं पहनती है ।
(5) ना कोई भोग, ना कोई फूल आदि कहीं चढ़ाने ले जाना है ।
(6) संजोत दिन भगतिया लोग मूँछ सहित दाढ़ी छिलवाते हैं ।
(7) उपवास की रात टोकरी में दीया जला कर घर लाते हैं ।
(8) भूतपिंड़ा में दीया रख कर धूप धुमना देते हैं ।
(9) घर भीतर दीया लेकर बुढ़ा- बुढ़ी को धूप देते हैं ।
10) ढाक बाजना मोरखी घाट कामान के ताल में बजाना है, इत्यादि ।

संजोत दिन से पाटा (महामाँय रूपी काष्ठ प्रतिमा) लेकर पूरे गाँव में जाकर घर-घर घूमते हैं और घर की महिलाएं आबगा हल्दी, काजल, सिन्दूर, अरवा चावल से चुमावन/पूजन करती हैं । कुछ भगतिया पाटा लेकर गाँव के घर-घर घूमते हैं तो कुछ भगतिया "पुरखइति खूँटा" को पाँच फूट गड्ढा खोदकर गाड़ते हैं और डाँडि (चड़क डाँग - झूलने वाला) को सख्त से बाँध देते हैं । डाँडि (चड़क डाँग) में चढ़ कर झूलने के

लिए एक मचान भी बनाया जाता है । प्रत्येक भगतिया प्रति दिन सायंकाल को बुढ़ा थान में "सांझा" देता है।

उपवास के शाम (मंछदरा) भोग्ताओं को धूप-धूवन की अग्निशिखा के ऊपर उल्टा लटका कर झुलाया जाता है जिसे "धुँआसी" कहा जाता है । फिर फूल (दहकते अंगार) के ऊपर चलकर बुझाना होता है जिसे "फूलखूँदी" कहते हैं ।

पारना दिन सभी भगतिया चड़क डाँग में झूलते हैं । कहीं-कहीं, कोई-कोई भगतिया अपने पीठ, छाती की चमड़ी में लोहे के बने हुए हुक, अंकुश से छेद करवाता है । कोई-कोई पीठ, छाती, जीभ में सूई चुभा लेते हैं एंव कोई-कोई तो जीभ में पतली तार को आर-पार करके नटुआ नाच करते हैं, जिसे "काँटा" कहा जाता है । जब तक भगतिया झूलता रहता है, तब तक उसकी माँ या बहन या पत्नी पुरखइति या खूँटकटि खूँटा के नीचे बुढ़ाबाबा - महामाँय की आराधना करती रहती हैं । प्रत्येक भगतिया झूलने से पूर्व पुरखइति खूँटा की परिक्रमा करता है और उनकी माँ या बहन या पत्नी लोटा के पानी से बेलपत्र द्वारा उसका स्नान कराती हैं। जरा याद कीजिये उस पीड़ा को जब हमारे पैरों में एक काँटा चुभ जाता है, परन्तु इन बुढ़ा बाबा के भक्तों को देखिये आखिर कैसे उनके पीठ में कई कील घुसा कर आरपार किया जाता है और बुढ़ाबाबा के भगतिया अपनी भक्ति में लीन रहते हैं ।

भगतिया अपने खोंइछा में अरवा चावल, फूल, बेलपत्र, कुछ खुदरा पैसा रखते हैं और झूलते समय उसे गिरा देते हैं जिसे नीचे के बच्चे लोग बिछने के लिए लूटा-लूटी करते हैं । बुजुर्गों के कथनानुसार यह बिछा हुआ पैसा शुभ माना जाता है और किसी भी शुभ काम में साथ लेकर चलने से बिगड़ा हुआ काम भी बुढ़ाबाबा की दोहाइ से ठीक हो जाता है ।

भोग्ताओं द्वारा आग में चलना और शरीर/जीभ में काँटा लेना इस परब की सबसे बड़ी विशेषता है । झारखंड के किसी भी परब में ऐसा पराक्रम नही होता है । दूसरी विशेषता यह है कि पाट भोगतिया (पाहन/नाँया) सभी भोगता के कंधे में चढ़कर बुढ़ाथान से फूलखूँदी स्थान तक जाता है ।

नटुआ नाच कुड़मि जनजाति का एक महत्वपूर्ण नृत्य है । इसे योद्धाओं का नृत्य भी कहा जाता है । इस नृत्य के नृतक को नटुआ कहा जाता है । इस नृत्य में नटुआ अपने हाथों में पारंपरिक हथियार टाँगी, फरसा, बलम, भकुआ, लाठ़ी, भाला-तलवार आदि लेकर और कमर में गमछा एंव पैरों में घुँघरू बाँध कर नृत्य किया करते हैं । यह आत्मरक्षा के लिए एक प्रकार का "मार्शल आर्ट्स" है ।

वार्तालाप

वी.जयश्री

मुख्य कार्यालय अधीक्षक, इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

हमारा भारत देश एक अति उत्तम महाद्वीप है जहाँ पहाड़, नदी सबको भगवान और माता के रूप में पूजा जाता है, सम्मान किया जाता है और परिजन के रूप में सोचा जाता है। यहां के लोगों का जीवन भी इनसे जुड़ा रहता है। जीवन के सभी अवसरों पर इनका महत्व बना रहता है। यहां तक की भाषाओं का भी मां समान सम्मान किया जाता है। मैं ने कई बार सोचा था कि इन भाषाओं के बीच बातचीत होती तो वह कैसे होगी, चलिए मै ने अपने कल्पना रूपी घोड़े को आगे दौड़ाया है, देखते हैं , क्या होता हैः-

तमिल (फोन में): तेलुगु बहना कल मिलेंगे, हम बहनों से मिलकर बहुत समय हो गया है।

तेलुगु: दीदी, मुझे अभी आप बुला रही हो, लेकिन तेलिंगिश बेटी की परीक्षा चल रही है, शुक्रवार समाप्त होती है। तो फिर शनिवार को मिलेंगे।

तमिलः तब तो फिर तेलिंगिश को भी साथ लाना। मै भी अपना तमिलिंगिश को साथ लाती हूँ।

तेलुगुः अच्छा तमिल दीदी , मै कॉन्फ्रेंस कॉल में हमारी सभी बहनें मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बंगला ......

(बीच में तमिल)

तमिलः रुको तेलुगु, क्यों एक-एक करके बोलती हो, हम तो बाइस बहनें है न आज रात ही 8 बजे हम सारी 22 बहनें कॉन्फ्रेंस कॉल से जुड़ेंगे। एक दिन निर्धारित करके अपनी-अपना बेटियों के साथ गेट टू गेदर रखेंगे।

(बीच में मम्मी की छूटी(मिस्ड) कॉल मोबाइल में दिखती है)

तेलुगुः (खुशी से चिल्लाती हुई) अरे दीदी , हम मम्मी को भूल गये। इसमें मुख्य अतिथि मम्मी जी होंगी, उनको कॉल में ज्वाइन कराओ।

मम्मी (संस्कृत) – तमिल, तेलुगु कैसी हो। आज सुबह से ही आप सब की याद आ रही थी। हर दिन एक बेटी से बात तो करती हूँ, लेकिन आप सब से मिलने को दिल चाहता है।

तमिल और तेलुगु (दोनों एक स्वर में) - मम्मी हम दोनों यही सोच रहे थे कि आज तो शाम को एक कॉन्फ्रेंस कॉल करेंगे और उसमें हम सब 22 पुत्रियाँ सुनियोजित तरीके से एक बड़ा गेट टू गेदर रखने के बारे में तारीख निर्धारित करेंगे और आप ही उसके मुख्य अतिथि होंगी।

मम्मी (संस्कृत) – पुत्री आप दोनों ही नहीं लेकिन आप 22 पुत्रियाँ मेरे ख्याल में सदैव रहेंगी। लेकिन मैं चिंतित हूं कि पति देव (अंग्रेजी) से इतना प्रभावित हो गई हैं आप कि भाषण में इतने अंग्रेजी शब्द आ रहे हैं।

तेलुगु और तमिल (दोनों एक साथ) – माता जी पतिदेव से प्रभावित होना भी भारतीय संस्कृति ही है। हम दोनों भारतीय संस्कृति को भी नहीं भूले हैं और न ही आपको (संस्कृत भाषा) । आपने ही हमें जन्म दिया और अंग्रेजी के साथ विवाह करवाया और हमारी बेटियाँ भी आपके यहां ही जन्मी हैं।

संस्कृतः आपके द्वारा निर्धारित कोलाहल मिलन में मेरी सभी नतिनों -तमिलिंगिश से लेकर ओडिलिंगिश तक को लेकर आना। उन सबसे मिलने के लिये मै बहुत दिनों से इच्छुक हूँ।

तमिल और तेलुगु (दोनों एक साथ)- जी माताजी।

(फिर एक महीने बाद) कोलाहल गेट-टू-गेदर में अनेक मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रबंध किया गया । माताजी बहुत आनंदविभोर है। उनके साथ 22 बेटियाँ उत्साह पूर्वक बैठी हुई हैं।

पहला कार्यक्रम नाच का है जो शुरु हो रहा है हिंग्लिश के पीछे-पीछे बाकी सब नतिन “हवा हवा आयी कहते मुझको हवा हवा आयी”, “हम करते है प्यार मिस्टर इंडिया से”।

संस्कृत और सभी दर्शक एक स्वर में उत्साह से “आ गयी हिंग्लिश सबसे प्यारी” चिल्लाते हैं और गुनगुनाते है “हम करते है प्यार मिस्टर इंडिया से”

******

बच्चों की पढ़ाई

ए. सुब्रमणि

मुख्य कार्यालय अधीक्षक,सामग्री प्रबंधन विभाग, पेरंबूर

हमारे कार्यालय में बोनस का दिन था, सभी कर्मचारी खुश थे और हर जगह उत्सव का माहौल था, क्यों नहीं हो, हमारे सहकर्मियों ने आयुध पूजा के अवसर पर भव्य बुफे लंच का भी इंतजाम किया था तो सब खुशी-खुशी खाने के लिए निकले । सामान्यतः इस दिन खाने के बाद (आज बुफे लंच) हम सभी जल्दी घर चले जाते थे। इसलिए हम सबकी खुशी और बढ़ जाती थी।

लेकिन हमने देखा कि इस खुशी के मौके पर हमारे एक प्रिय मित्र उदास बैठे थे और माहौल का आनंद नहीं ले रहे थे। हमने उन्हे बुलाया और पूछा कि बोनस के दिन आप इतने उदास क्यों दिख रहे हैं, क्या कोई गंभीर समस्या है? मित्र ने उत्तर दिया कि हां , यद्यपि बोनस की खुशी है और इससे मेरी आय में इजाफा हुआ है लेकिन खर्च इससे ज्यादा है । मैं अपने बच्चों की ट्यूशन फीस की व्यवस्था नहीं कर पा रहा हूँ, अंतिम तिथि भी नजदीक आ रही है और मुझे और दस हजार की आवश्यकता है । क्या आप में से कोई मेरी मदद कर सकते हैं ताकि मेरे बच्चों की शिक्षा बाधित न हो।

इस सवाल पर पूरा सेक्शन चुप हो गया और कोई भी उसकी मदद के लिए आगे नहीं आया। हालांकि हम सब उसकी मदद करना चाह रहे थे, लेकिन एक जुट होकर हम उक्त राशि एकत्रित नहीं कर पाए। खुशी का मूड एकदम बिगड़ गया। लेकिन लगता है भगवान ने उनकी प्रार्थना सुनी और पूजा मनाने आए हमारे एक सेवा निवृत्त मित्र ने कहा, हैलो भाई, चिंता मत करो, मैं राशि का इंतजाम करूंगा और वह भी बिना ब्याज के । लेकिन मैं इस मौके पर एक सरल विधि जिसका मैंने पालन किया है, उसके बारे में दोपहर के भोजन के बाद आप सबको बताऊंगा ताकि आप लोग ऐसे मौकों पर बिना किसी संकट के पैसों की व्यवस्था कर सके।

यह सुनकर हमारे मित्र की खुशी की कोई सीमा न रही और वे हमारे साथ दोपहर का भोजन करने आए। सबने भोजन का आनंद लिया । भोजन के दौरान अनौपचारिक बातचीत के समय हमें पता चला कि हमारे सेवा निवृत्त मित्र ने वित्तीय बचत की सरल और अनुशासित विधि का पालन करते हुए बहुत से लोगों की आर्थिक मदद की है। उन्होंने इस संबंध में कई लोगों को मार्गदर्शन भी दिया है। भोजन के बाद हालांकि हम सब घर जाना चाहते थे फिर भी इनसे सलाह लेने हेतु सभी एकत्र हुए।

उस महोदय ने बच्चों की शिक्षा को निर्बाध रखने के लिए वित्तीय नियोजन पर एक छोटा सा भाषण दिया। अपने भाषण की शुरुआत में उन्होंने कहा कि आपकी पीढ़ी बहुत भाग्यशाली है क्योंकि आजकल सभी वित्तीय लेनदेन ऑनलाइन किए जा रहे हैं । बस, कल्पना कीजिए कि मैं ने पिछले तीन दशकों से अपनी आरडी की मासिक किस्त का भुगतान करने के लिए बैंक/डाकघर जाकर लंबी कतार में खड़े होकर कितना समय बिताया होगा । हम सभी जानते हैं कि जैसे ही स्कूल खुलते हैं बच्चों के स्कूल की फीस भरनी होती है तो क्यों न इसके लिए कोई समयबद्ध योजना बनाई जाए ।

इस पर उनके सरल सुझाव इस प्रकार थेः-

(a) हमें हर महीने वेतन का कम से कम 10-15% बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

(b) बच्चे के जन्म के बाद, बच्चे के नाम पर पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF) खाता खोला जाना चाहिए और उसमें कम से कम 500 रुपये प्रतिमाह जमा करने की आदत डालनी चाहिए और यदि संभव हो तो राशि को 100 रुपये प्रतिमाह बढ़ाना चाहिए, ताकि 20 साल बाद बच्चे के कॉलेज में प्रवेश के लिए एकमुश्त राशि उपलब्ध हो सके।

(c) चूंकि स्कूलों की फीस बढ़ती जाती है इसलिए हर महीने आरडी(RD) खोलें ताकि एक साल बाद किसी भी समय हमारे पास 13 RD हों और एक साल बाद एकमुश्त राशि उपलब्ध हो । उदाहरण के लिए 150 रुपये प्रति माह RD से आपको 24 महीने बाद 21600 रुपये मिलेंगे (150*12 = 1800 और 1800*12 = 21600) । इस गणना में ब्याज दर नहीं जोड़ी गई है।

(d) माता-पिता को चाहिए कि बैंक खाता खोलकर बच्चों को वित्तीय रूप से साक्षर बनाए और खुद बचत उपायों का पालन करते हुए बच्चों को एक मिसाल पेश करना होगा ताकि वे भी अपने वित्तीय लेनदेन को सही तरीके से संभाल सके।

हम सभी लोग उनके भाषण से बहुत ही प्रभावित हुए और सभी ने इसे पालन करने का विनिश्चय किया। उनके सरल सुझावों ने बच्चों की शिक्षा को सुरक्षित करने के लिए बहुत से परिवारों की मदद की है। अगर आप में से कई लोग इसका पहले से ही पालन कर रहे हैं तो ठीक है, नहीं तो मुझे आशा है कि आप इन सुझावों का पालन करेंगे और बच्चों की पढ़ाई निर्बाध रूप से चले, इसपर अवश्य ध्यान देंगे।

मैं ने सुना था कि हमारे मित्र ने इन सुझावों का पालन किया और बच्चों ने बिना किसी वित्तीय कठिनाई के अपनी डिग्री पूरी कर ली है। कितनी खुशी की बात है।

दक्षिण अयोध्या- भद्राचलम

एम.गीता

मुख्य वाणिज्य लिपिक, वाणिज्य विभाग/मुख्यालय

मै अपने परिवार और कार्यालय के कुछ दोस्तों के साथ एक शॉर्ट ट्रिप पर विजयवाड़ा गयी। तब मेरी बेटी ने कहा विजयवाड़ा से राजमंड्री और वहां से भद्राचलम राम मंदिर जायेंगे। सब खुशी-खुशी यात्रा के लिए तैयार हो गये।

गोदावरी नदी के पास राजमंड्री शहर स्थित है। यह हिंदुओं का एक तीर्थ स्थान है और यहां सबसे प्रसिद्ध श्री वीरभद्र स्वामी का मंदिर है। वीरभद्र स्वामी के दर्शन के बाद शाम को हमने आरती दर्शन किया। अद्‌भुत अनुभव था वह।

अगले दिन सुबह 7 बजे हम गोदावरी नदी में नौका विहार के लिए गये। इसके बाद राजमंड्री के आसपास के कुछ पर्यटन स्थल भी देखे जैसे- गोदावरी पुल, इस्कॉन मंदिर, रल्लाबंदी सुब्बाराव संग्रहालय, राजमंड्री घाट, मार्कन्डेय मंदिर और पापी हिल्स आदि। पापी हिल्स में 6-7 घंटों का नौका विहार अत्यन्त मनोरम रहा। हम

अगले दिन राजमंड्री से भद्राचलम के लिए निकले।

भद्राचलम

भद्राचलम शहर में स्थित सीता-राम मंदिर भगवान राम का एक मुख्य मंदिर है। भद्राचलम के मंदिर में राम, सीता और लक्ष्मण की मूर्तियां स्वयंभू हैं। यह मंदिर भक्त रामदास(भद्राचल रामदासू) द्वारा बनवाया गया। माना जाता है कि भगवान श्रीराम ने गोपन्ना उर्फ भद्राचल रामदासु को गोलकोंडा सुलतान के क्रोध से बचाया था जब उनपर इल्जाम लगाया गया था कि रामदासू ने सरकार में राजस्व अधिकारी रहते हुए सरकार का पैसा मंदिर बनवाने में लगा दिया था। 12 साल कारावास भोगा था इन्होंने इस अपराध के लिए। लेकिन माना जाता है कि भगवान श्रीराम ने पैसे चुका दिए थे।

भद्राचलम को दक्षिण अयोध्या कहा जाता है। भद्राचलम को गोदावरी नदी के तट पर स्थित दिव्य क्षेत्रों में से एक माना जाता है।

भद्राचलम की यात्रा के लिए सितंबर से अप्रैल सबसे अच्छा समय है। रामनवमी उत्सव हर वर्ष बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है और इसी समय भगवान श्रीराम और सीता मैया का विवाह हर्षोल्लास के साथ संपन्न कराया जाता है। इसमे भाग लेने के लिए दूर-दूर से भक्तजन यहां आते हैं। यह पर्व, भद्राचलम में एक महत्वपूर्ण त्योहार है।

भद्राचलम जाने का मार्ग:-

हवाईजहाज से- भद्राचलम का निकटतम एयरपोर्ट, विजयवाड़ा है और वहाँ से आप निजी टैक्सी / बस ले सकते हैं।

रेल गाड़ी से- भद्राचलम (कोत्तगुडेम) तक पहुंचने के लिए रेलगाडियाँ उपलब्ध हैं जो मंदिर से 40 कि.मी. की दूरी पर स्थित निकटतम रेलवे स्टेशन है।

सड़क द्वारा- विजयवाड़ा, हैदराबाद, खम्मम, वारंगल, तिरुपति और राज्य के मुख्य शहरों से भद्राचलम तक पहुंचने के लिए बड़ी संख्या में बसें उपलब्ध हैं।

मंदिर का समय: सुबह : 4.30 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक और दोपहर : 03.00 बजे से रात 09.00 बजे तक मंदिर खुला रहता है।

भद्राचलम और आसपास के कुछ स्थानों को 2-3 दिनों में देख सकते हैं। भद्राचलम में राम मंदिर के अलावा और भी कई मंदिर हैं जैसे श्री सीतारामचंद्र स्वामी मंदिर, अभय आंजनेय मंदिर, श्री ललिता परमेश्वरी मंदिर और सुब्रमण्य स्वामी मंदिर।

भद्राचलम में बहुत सारे होटल और धर्मशालाएँ उपलब्ध हैं । ये प्रमुख त्योहारों और छुट्टियों के दौरान जल्द भर जाते हैं । लेकिन जब हम वहाँ थे तब एक अच्छी धर्मशाला में हमे कमरा मिला। धर्मशालाओं का किराया 300 रुपये प्रति दिन या उससे कम से लेकर लगभग 800 रुपये प्रति दिन तक है।

भद्राचलम मंदिर देखने के बाद मैं अपने परिवारवालों के साथ उत्तर प्रदेश में स्थित राम मंदिर अयोध्या जाने के लिए तैयार हो रही हूं। इस साल के अगस्त या उसके बाद हम अवश्य अयोध्या जाएंगे और में इसके बारे में भी आपको कुछ जानकारी दूंगी।

******

एक पत्र - स्वर्गवासी दादी के नाम

कुंदन कुमार राउत
कनिष्ठ अनुवादक, पालक्काड मंडल

प्रिय दादी

प्रणाम। मेरे दिल में आपकी यादें हमेशा ही जीवंत रहेंगी। आपके इस बहुमूल्य जीवन से मुझे कई सीखें मिली हैं और आपकी अमूल्य शिक्षाएं मेरे जीवन को एक नया मायना देने में सहायक हुई हैं।

आपकी यादें मुझे हर दिन बार-बार आती हैं। आपका प्रेम, समर्पण, और संघर्ष करते वक्त भी आपकी दृढ़ता और आत्मविश्वास से मुझे प्रेरणा मिलती रही। आपकी मुस्कान और प्यार भरी बातों ने मुझे सहारा दिया है, जब मैं किसी भी संघर्ष या मुश्किल से गुजरता हूँ।

आपका जाना एक अद्वितीय क्षति है, लेकिन मैं जानता हूँ कि आप हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहेंगी। आपकी अनमोल यादें हमें आपके साथ बिताए सुखद समयों का स्मरण कराती हैं और हमें एक अदृश्य बंधन का एहसास कराती हैं।

दादी, हमारे जीवन का वह अनमोल रत्न हैं, जो हमें न सिर्फ अच्छे संस्कारों से लेकर संस्कृति और सही राह का पथ सिखाती हैं, बल्कि हमें एक प्यार भरी दुनिया का आनंद भी देती हैं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूँ क्योंकि मुझे अपनी दादी का प्यार और स्नेह मिला है।

बचपन से ही दादी, आप ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। आपने नहाना सिखाया, संस्कार सिखाया, और संस्कृति को समझाया। आप की मेहनत और समर्पण से भरी जिंदगी ने मुझे सही मार्ग पर चलने की सीख दी। आप मुझे बचपन में मेले और अन्य बाजार में ले जाया करती थीं जिससे हमारे बंधन में और भी मजबूती आती थी।

दादी आप का प्यार कभी-कभी थप्पड़ों के रूप में भी आता था, लेकिन आप की ममता और प्यार से वे थप्पड़ें भी अनमोल बन जाती थीं। आप ने मुझे हमेशा अपनी गोद में खिलाया, मेरे साथ खेला और मुझे अपनी चाहत और स्नेह से लबालब किया। न केवल मुझे बल्कि अपने परपोते को भी आप ने अपनी गोद में खिलाया, उसे भी अपना प्यार दिया।

दादी का प्यार कोई सामान्य चीज नहीं होती। यह वह अनमोल खजाना है जो हर किसी को नहीं मिलता। दादी का प्यार हर व्यक्ति के नसीब में नहीं होता, लेकिन जो भाग्यशाली होते हैं वे इसे महसूस करते हैं। दादी की ममता और प्यार का अद्वितीय अनुभव हर किसी के लिए अविस्मरणीय होता है।

दादी आप का प्यार हमारे जीवन का एक अनमोल अंश है। आप की ममता, स्नेह, और धैर्य ने मुझे एक बेहतर व्यक्ति बनाया है। आप हमेशा मेरी यादों में रहेंगी और आपके द्वारा दी गई सीख को अपने जीवन में बखूबी अपनाऊंगा।

मैं आपकी शांति की कामना करता हूँ, और मेरी श्रद्धांजलि हमेशा आपके साथ है। आपकी आत्मा को शांति मिले और आप हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहें।

इन्हीं कामनाओं के साथ

आपका पोता
कुंदन

साइबर अपराध

जेब सेल्व शांति
वरिष्ठ आशुलिपिक, बिजली विभाग, मुख्यालय

'डिजिटल दुनिया ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है जहाँ कुछ भी गोपनीय या रहस्य नहीं रह जाता।'

जब भी मैं इन पंक्तियों को पढ़ती हूँ तो मुझे अचरज हो जाता है कि यह कितना सच है? वर्तमान विश्व ऐसी स्थिति में पहुँच गया है जहाँ कुछ भी छुपा हुआ नहीं है? लेकिन देखा जाए तो आजकल यह बिलकुल सच निकल रहा है। इंटरनेट ने आज कमाल कर दिया है। उसने विश्व की सीमाएं लांघकर ज्ञान, सूचना और संपर्क संबंधी क्रांति को सभी व्यक्तियों तक पहुंचा दिया है। माना कि इससे सुविधाएं बढ़ी हैं तथापि इस सूचना क्रांति के कारण उत्पन्न मानसिक विकृतियों के कारण इसका दुरुपयोग भी अधिक हो रहा है। आजकल सभी जगहों पर इसका बोलबाला है और सभी साइबर क्राइम पर काबू पाने पर चर्चाएं कर रहे हैं।

आज के समय में इंटरनेट के उपयोग से समय और पैसा दोनों की बचत हो रही है। इंटरनेट ने हमारी जिंदगी को और सुगम बना दिया है, लेकिन इसके साथ-साथ इंटरनेट पर आज अपराध का एक समृद्ध संसार भी विस्तरित हो चुका है। सूचना एवं पहचान की चोरी की जाती है। कई तरह के आपराधिक कार्य जैसे यौन अपराध, पोर्नोग्राफी, वायरस अटैक आदि बढ़ गए हैं।

साइबर क्राइम एक ऐसा गैर-कानूनी कार्य होता है जिसमें सूचना तकनीकी में हुई प्रगति का लाभ उठाते हुए आपराधिक गतिविधियाँ की जाती हैं। इस प्रकार के अपराधों से निपटने हेतु साइबर कानून भी बनाए गए हैं।

साइबर क्राइम के तहत आने वाले विभिन्न कार्य:-

अनधिकृत पहुँच और हैकिंग:

किसी भी कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क में अनुमति के बिना प्रवेश करने को अनधिकृत पहुँच बनाना या हैकिंग कहा जाता है । इस प्रकार के कार्य आमतौर पर वित्तीय अपराध कार्यों से जुड़े होते हैं। कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं -

- किसी बैंक के खाताधारकों के अकाउंट से दूसरे अकाउंट में पैसे स्थानांतरित करना।
- किसी व्यक्ति के क्रेडिट कार्ड की जानकारी चुरा कर उसका दुरुपयोग करना।
- किसी वेबसाइट के घटक को अनधिकृत तरीके से परिवर्तित करना।

भारत में हैकिंग संबंधित कार्यविधियों को गैरकानूनी ठहराया जा चुका है और इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2008 के अनुसार सजा की व्यवस्था है।

डाटा चोरी:

किसी संस्था या व्यक्ति या कंप्यूटर नेटवर्क में अनधिकृत व्यक्ति द्वारा बिना अनुमति लिए उसके कंप्यूटर के डाटा की कॉपी करना या उसे दूसरों को शेयर करना डाटा चोरी अपराध के तहत आता है।

कंप्यूटर वायरस का प्रसारः

किसी प्रोग्राम को किसी कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क की अनुमति के बिना कंप्यूटर में प्रवेश कराना, कंप्यूटर वायरस को फैलाना माना जाता है। सामान्यतः देखा जाए तो वायरस प्रोग्राम का कार्य किसी अन्य के कंप्यूटर डाटा को खराब करना होता है। इससे कम समय के लिए ही सही, पूरी प्रणाली अस्त-व्यस्त हो

जाती है। 'रैन्समवेयर' जैसे कंप्यूटर वायरस द्वारा भारत और दुनिया के अन्य देशों पर हुए हमले को कोई भी भूल नहीं सकता और संभवतः आजतक के इतिहास का सबसे बड़ा साइबर हमला यही है।

पहचान की चोरीः

यह, किसी अन्य व्यक्ति की पहचान चुराकर कंप्यूटर नेटवर्क पर कार्य करना होता है। कंप्यूटर नेटवर्क पर स्वयं की पहचान छुपाते हुए स्वयं को दूसरे के नाम पर व्यक्त करते हुए उस व्यक्ति के नाम पर धोखाधड़ी या घपला करना भी इस अपराध के तहत आता है।

ट्रोजन हमलाः

ट्रोजन प्रोग्राम ऐसे प्रोग्राम होते हैं जो देखने में उपयोगी लगते हैं लेकिन उनके द्वारा कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क को नुकसान पहुँचाया जा सकता है।

इस प्रकार साइबर अपराध के अंतर्गत कई ऐसे गैर-कानूनी कार्य किए जाते हैं जिनसे कंप्यूटर प्रणाली को हथियार के रूप में उपयोग करते हुए दूसरे कंप्यूटरों को निशाना बनाया जाता है। वर्तमान में साइबर अपराध के जरिये सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से किसी व्यक्ति की गोपनीय सूचनाओं की जानकारी को साझा करके उससे धन वसूलने की कोशिश की जाती है। साइबर युद्ध के माध्यम से एक देश दूसरे देश के कंप्यूटर नेटवर्क को नष्ट कर सकता है । सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारियों को हासिल करके दूसरे राष्ट्र की संप्रभुता को भी चुनौती दे सकता है। इतना ताकतवर है यह। कहा जाता है कि अमेरिका तथा इजरायल ने वर्ष 2009 में ईरान के परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ साइबर तकनीक का इस्तेमाल किया था और 2016 में संपन्न अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रूसी सरकार द्वारा हैकिंग की बात सामने आयी थी जो संपूर्ण विश्व के लिये एक चेतावनी का विषय बना है। वैसे इस समस्या पर काबू पाना किसी एक देश से नहीं हो सकता है, यह एक वैश्विक समस्या है और इसका समाधान भी सभी के सम्मिलित प्रयासों से वैश्विक स्तर पर ही किया जा सकता है।

विचारणीय बिंदु यह है कि भारत में साइबर सुरक्षा तंत्र का विकास अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। ऐसे समय में जहाँ हमारा देश 'डिजिटलीकरण' की ओर तेजी से बढ़ रहा है, साइबर सुरक्षा का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। अतः वर्तमान डिजिटल एवं सूचना-संचार तकनीकी के युग में एक बेहतर 'साइबर सुरक्षा' की आवश्यकता है। साइबर अपराधों की बढ़ती संख्या और गहनता को देखते हुए सभी राष्ट्रों को मिल जुलकर इस समस्या का समाधान निकालना अति आवश्यक है क्योंकि सभी राष्ट्रों के समन्वित प्रयासों से ही इस समस्या का समुचित समाधान निकाला जा सकता है। इसके लिए समय-समय पर विश्वस्तरीय सम्मेलन और वार्ताएं आयोजित की जाती हैं। इनका मुख्य उद्देश्य साइबर अपराध से समाज को सुरक्षित रखने के लिये एक सामान्य नीति बनाना होता है। भारत में भी साइबर हमलों की बढ़ती संख्या को देखते हुए समय-समय पर इस दिशा में प्रयास किये जाते आ रहे हैं।

डिजिटल होती दुनिया में साइबर अपराध एक गंभीर एवं जटिल समस्या है। हैकर, प्रायः कमजोर कंप्यूटर नेटवर्कों पर ही ध्यान देते हैं , अतः तकनीक को उन्नत करते हुए तकनीकी रूप से सुदृढ़ नेटवर्क का निर्माण करना हमारी प्राथमिक आवश्यकता है। इसके लिये एक से बढ़कर एक नई तकनीकी उभरती आती है और जितना विकास इनमें होता है उतना ही साइबर अपराध की गतिविधियां भी विकसित होती जा रही हैं। यह तो कभी न समाप्त होनेवाला निरंतर युद्ध जैसा है।

आज जबकि इंटरनेट क्रांति अपनी पाँचवीं पीढ़ी में प्रवेश कर गई है तो इस हालत में यदि हमें साइबर हमलों की चुनौती को पार कर इंटरनेट को सुरक्षित एवं भरोसेमंद बनाने में सफल होना है तभी सूचना की यह क्रांति हमारे लिये वरदान सिद्ध होगी।

बढ़ती गर्मी की लहरें

मनु शिवशंकर

वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, बिजली विभाग, मुख्यालय

भारत में अत्यधिक गर्मी की लहरें चल रही हैं आजकल जो सबके लिए एक बड़ी समस्या बन गई है। इससे कई स्वास्थ्य और पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। इनसे समाज और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए जोखिम होता है। देखने में आया है कि इस वर्ष गर्मी की लहरों से अधिक से अधिक लोग मर रहे हैं। अतः हमें गर्मी के महीनों के दौरान इन मौतों को रोकने के लिए नए तरीके खोजने की जरूरत है।

(ग्रीष्म लहर) गर्मी की लहर क्या होती है?

अत्यधिक गर्मी की लंबी अवधि को आमतौर पर हीट वेव कहा जाता है। जब किसी स्टेशन का अधिकतम तापमान मैदानी इलाकों के मामले में कम से कम 40 डिग्री सेल्सियस और पहाड़ी क्षेत्रों के लिए कम से कम 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार इसे लू माना जाता है। सामान्य तापमान में 5°C से 6°C की वृद्धि होती है तो लू की घोषणा की जाती है और वहीं सामान्य तापमान 7°C या इससे अधिक बढ़ जाने पर भीषण लू की स्थिति आ जाती है।

गर्मी की लहरों के कारण:

- कम नमी होना ।
- आंशिक रूप से प्री-मानसून वर्षा के असामान्य पैटर्न के कारण ।
- ग्रीनहाउस गैसों की उत्पत्ति के कारण वैश्विक तापमान बढ़ जाता है और इसके कारण गर्मी की लहरें अधिक लगातार और तीव्र हो सकती हैं।
- वायु प्रदूषण का उच्च स्तर वातावरण में गर्मी को बढ़ा सकता है जिससे तापमान में भी वृद्धि हो सकती है।
- पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण किसी क्षेत्र में गर्मी अवशोषण और उत्सर्जन के बीच का संतुलन बिगङ जाता है और यह भी गर्मी की लहरों का कारण बन सकता है।

गर्मी की लहरों का प्रभाव:

स्वास्थ्य पर प्रभावः गर्मी की लहरों के कारण शरीर में निर्जलीकरण, थकावट और हीट स्ट्रोक आदि समस्याएं हो सकती हैं। उच्च तापमान में लंबे समय तक रहने पर हृदय और श्वसन संबंधी बीमारियों हो सकती हैं।

आर्थिक प्रभाव: गर्मी की लहरों के कारण कार्यबल के थक जाने की संभावना बढ़ जाती है जिससे उत्पादकता प्रभावित हो सकती है। गर्मी की लहरों के दौरान शीतलन के लिए ऊर्जा की मांग बढ़ जाती है। इससे बिजली कटौती हो सकती है और ऊर्जा लागत बढ़ सकती है।

कृषि पर प्रभाव: गर्मी की लहरें फसलों को नुकसान पहुंचाती हैं जिससे पैदावार कम हो जाता है। यह खाद्य कीमतों में वृद्धि का कारण बन सकता है।

पर्यावरण पर प्रभाव: गर्मी की लहरों से सूखा, जंगल की आग की स्थिति आ सकती है और पारिस्थितिक तंत्र विनष्ट हो सकता है।

सामाजिक प्रभाव: गर्मी की लहरों के कारण बुजुर्ग, बच्चे और कम आय वाले लोग अधिक पीढ़ित होते हैं। इससे सामाजिक अशांति बढ़ सकती है और काम के घंटों की हानि हो सकती है।

गर्मी की लहरों के संभावित समाधान:

अधिक पेड़ लगाना : पेड़ छाया प्रदान करते हैं और शहरी क्षेत्रों को ठंडा रखने में मदद करते हैं। वे वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड को भी खींच लेते हैं जो ग्रीनहाउस गैस प्रभाव को कम करने में मदद करता है। अतः अधिक संख्या में वृक्षारोपण करना है।

शहरी नियोजन में सुधार: शहरों के आवास स्थानों पर हरी छत बिछानी होगी। इमारतों पर परावर्तक सामग्री का उपयोग करना है और हरित स्थान की मात्रा बढ़ाकर शहरी ताप प्रभाव को कम किया जा सकता है।

चेतावनी प्रणालियाँ विकसित करना : सरकार को चाहिए कि लोगों को गर्मी की लहरों के खतरों के प्रति सचेत करते रहे। इसके लिए मौसम पूर्वानुमान, सार्वजनिक घोषणाएँ और शिक्षा अभियान जैसी प्रणालियाँ विकसित करने की आवश्यकता है।

स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना: गर्मी की लहरों के दौरान, लोगों को गर्मी से संबंधित बीमारियों आ सकती हैं। इनसे बचने के लिए हाइड्रेटेड रहने की आवश्यकता होती है। इसके लिए सभी के लिए विशेषकर कमजोर वर्ग को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना है।

ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना: ऊर्जा की खपत को कम करने से गर्मी की लहरों के दौरान बिजली की मांग को कम करने में मदद मिल सकती है । ऊर्जा दक्षता सौर व पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग से बढ़ाई जा सकती है।

निष्कर्ष:

गर्मी की लहरों का बढ़ना एक महत्वपूर्ण चुनौती है जिस पर तत्काल ध्यान दिया जाना है और आवश्यक कार्रवाई करने की आवश्यकता है। गर्मी की लहरों की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता के कारण मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। इसके कई कारक हो सकते हैं जैसे प्राकृतिक और मानव निर्मित कारक। योजनाएं बनाकर उन्हें सुनियोजित तरीके से कार्यान्वित किया जाता है तो इस समस्या का हल निकाल सकते हैं। योजनाएं तो बनती हैं लेकिन कार्यान्वयन में ही हम विफल हो जाते हैं। इसको सख्ती से पालन करना है। यह आवश्यक है कि हम अपनी भलाई के लिए गर्मी की लहरों के प्रभाव को कम करने के लिए सक्रिय उपाय बनाएं और उनका पालन करें।

सिक्का-पक्का

एस.बालसुब्रमणियन
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

आप सब जानते हैं कि पैसा नहीं तो दुनिया में कुछ नहीं। सदियों से मनुष्य के सभी इच्छाओं के लिए पैसे की मांग बढती जा रही है। दरअसल आप देख सकते हैं कि मेरा नाम बालसुब्रमणियन है और इसे अंग्रेजी में नामविज्ञान (Nameology) के अनुसार ऐसे भी बदला जाता है जैसे- Balasubra**Money.** कहने का तात्पर्य यह है कि पैसे का खेल सभी जगह चल रहा है।

वर्तमान में हम सिक्का/रुपए के जमाने में रहते हैं और इससे हटकर कुछ इतिहास के पन्नों को पीछे पलटने पर हमें यह पता चलता है कि यह सिक्का/रुपए नहीं रहे तो इसके बदले क्या था? इस लेख में शुरू से अंत तक पैसे का खेल देखेंगे।

वस्तु विनिमयप्रणाली – Barter System

संक्षेप में, वस्तु विनिमय प्रणाली एक ऐसा पद्धति है जिसमें एक पक्ष द्वारा किसी अन्य पक्ष से किसी अन्य वस्तु या सेवा के बदले में एक वस्तु या सेवा उपलब्ध कराई जाती थी।

पाठक को इस विषय को समझाने के लिए .....

उदाहरण :- एक बढ़ई है जो किसान के लिए हल या खेती के लिए लकड़ी/लोहे की कुछ वस्तु बनाता है। इसे बनाने पर लगने वाले श्रम और सामग्री के लिए नकद का भुगतान करने के बजाय, किसान, बढ़ई को फसल या खाद्य सामग्री देता है।

इस प्रणाली में कुछ सुविधाएं थी और कुछ असुविधाएं भी थी। समय बदलता गया और दुनिया में सिक्के/रुपए के जमाने आ गए और संसार के सभी देश अपने-अपने सिक्के/रुपए छापने लगे और पूरे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर डालर/पाऊंड/यूरो जैसी करेंसियों द्वारा लेन-देन होने लगा।

सिक्के/रुपए के जरिए भुगतान के आज के जमाने में इन सिक्कों/रुपयों के बदले डिजिटल माध्यम में लेन-देन होना शुरु हुआ है।

हम वर्तमान में डिजिटल युग में रहते हैं और इस डिजिटल लेन-देन के बारे में संक्षिप्त रूप में मैं पाठकों को बताना चाहता हूं।

आइए हम अब भुगतान के कुछेक प्रकार पर नज़र डालते हैं:

भुगतान विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। इनमें नकद, क्रेडिट/डेबिट/प्रीपेडकार्ड, क्यूआर कोड, नेटबैंकिंग, ऑटो-पे, पेपर चेक, UPI (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफ़ेस), भारत इंटरफ़ेस फॉर मनी (BHIM),मोबाइल/ डिजिटल वॉलेट,पीओएस टर्मिनल, NEFT (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फ़ंड ट्रांसफ़र), RTGS (रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट), IMPS (तत्काल भुगतान सेवा),अभी खरीदें बाद में भुगतान करें (बीएनपीएल),आधार सक्षम भुगतान प्रणाली (AePS),भारत बिल भुगतान प्रणाली

(BBPS),राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह (NETC) FASTagऔर यहाँ तक कि बिटकॉइन जैसी डिजिटल मुद्राएँ भी शामिल हैं।

अब पाठकों को बहुत खुशी होगी कि वे घर बैठे ऑनलाइन या बाहर ऑफलाइन पर बिना सिक्के/रुपए की मदद से केवल डिजिटल माध्यम से सभी प्रकार का लेन-देन कर सकते हैं।

मगर इस प्रकार की डिजिटल लेन-देन सेवा ग्राहक को सुविधाजनक होते हुए भी साइबर अपराधों से भी बची नही है। इस संबंध में अधिक से अधिक जानकारी भी रखनी होती है।

लेन-देन के मामले में संक्षिप्त रूप से साइबर अपराध पर पाठक का ध्यान खींचना चाहता हूं।

1. हैकिंग-Hacking
2. फ़िशिंग-Pishing
3. रैनसमवेयर-Ransomware
4. डेटा उल्लंघन-Date Breaches
5. एडवांस्ड पर्सिस्टेंट थ्रेट्स (APTs- Advanced Presistent Threats)
6. पॉइंट ऑफ़ सेल (POS- Point of Sale) अपराध
7. ATM स्किमिंग... आदि आदि

इस प्रकार साइबर अपराध से सुरक्षित रहने के लिए साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में बहुत सारे तकनीकी विकास आ चुके हैं।जैसे-

1. नेटवर्क सुरक्षा
2. क्लाउड सुरक्षा
3. एंडपॉइंट सुरक्षा
4. मोबाइल सुरक्षा
5. IoTसुरक्षा
6. एप्लिकेशन सुरक्षा आदि... आदि

इस प्रकार के साइबर अपराध से बचने के लिए साइबर सुरक्षा की आवश्यकता है, जिसमें नियोजन, सुरक्षा, सत्यापन, जागरूकता और सहयोग शामिल हो। इन पाँच क्षेत्रों में से प्रत्येक पर ध्यान केंद्रित करके और सुरक्षा उपायों को लागू करते हुए, आप या आपका संगठन/कार्यालय इस प्रकार के साइबर अपराधों से बच सकते हैं।

किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी के लिए प्रणाली को ठीक से समझना अत्यंत जरूरी होता है। इसके लिए हमें तकनीकी रूप से जागरूक रहना आवश्यक होता है। अतः हमें सिक्कों/रुपयों के बारे में पक्का ज्ञान रखना है।

तमिल मंचीय नाटक जगत के जनक

आर. उषानंदिनी

वरिष्ठ अनुवादक, लोको वर्क्स/पेरंबूर

हम सब फिल्मी दुनिया को भली-भाँति जानते हैं और हम अपने दैनंदिन जीवन में मनोरंजन के तौर पर फिल्मों को देखने के लिए अपना काफी समय बिताते हैं। लेकिन कई दशकों पहले जब भारत में फिल्मी दुनिया अपने पैर पसार रही थी तब मंचीय नाटक की दुनिया ही भारत के हर प्राँत में संबंधित भाषा में लोगों का भरपूर मनोरंजन कर रही थी। नाटक परंपरा काफी पुरानी है और बीसवीं सदी तक भी यह अपने चरमोत्कर्ष पर थी। अफसोस की बात है कि आज के ज़माने में अधिकांश लोग इस अद्‌भुत नाटक कला से या तो अनभिज्ञ हैं या फिल्मों, सीरियलों की अपेक्षा इस कला को प्राथमिकता नहीं देते हैं।

मंचीय नाटकों से अनभिज्ञ लोगों को यह जानकर अचरज होगा कि नाटक की दुनिया आज भी समाज के एक विशेष वर्ग के लोगों का मनोरंजन कर ही रही है और कला की इस दुनिया के सहारे भी कई लोग अपनी आजीविका कमा रहे हैं। जी हाँ, आज भी चेन्नै और भारत के अन्य शहरों और गाँवों में विभिन्न प्रकार के नाटकों का मंचन सक्रिय रूप से किया जा रहा है। पिछली सदी की भाँति न सही, इक्कीसवीं सदी में भी नाटक जगत जैसे-तैसे अपनी यात्रा को बरकरार रखता आ रहा है।

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में जब हर कहीं नाटकों का बोलबाला था, चेन्नै शहर में ढ़ेर सारी सभाएँ थीं जो नाटकों का मंचन करती थीं। उन दिनों प्रतिदिन नाटकों का मंचन किया जाता था। ऐसे कई कलाकार थे जो दिन में सिनेमा की शूटिंग में होते थे और शाम को नाटक में अभिनय करते थे। ऐसे भी लोग थे जो दिनभर कार्यालय में काम करते थे और शाम को नाटक में अभिनय करते थे। आज तो शूटिंग करके एडिटिंग करने के बाद आधुनिक तकनीक के प्रयोग से कई तरह के बदलाव और विकास किए जाते हैं। लेकिन उन दिनों नाटक के शुरू होते ही मंच पर प्रवेश करके संवादों को बिना भूले या बदले बोलकर एक ही टेक में गीत भी गाकर दर्शकों का मनोरंजन करने की व्यवस्था थी। साइड में संगीत के लिए बाजे बजते थे। इस तरह की नाटक-कला परंपरा में ही एमजीआर, शिवाजी गणेशन जैसे तमिल फिल्मों के दिग्गजों ने काम किया था। लेकिन इन सबके गुरु थे – टी. के. षण्मुखम।

आज टी के षण्मुखम को शायद ही कोई जानता होगा क्योंकि वे “अव्वै षण्मुखम” के रूप में लोकप्रिय हैं।

टी. के. षण्मुखम् : टी. के. षण्मुखम **तमिल नाटक जगत के जनक** माने जाते हैं। नाटक जगत ही नहीं तमिल फिल्मी दुनिया में भी लोकप्रिय अभिनेताओं / अभिनेत्रियों के गुरु थे। ये इन्हें भक्ति और प्रेम से “अण्णाच्चि” कहकर पुकारते थे। इनका जन्म सन् 1912 को तिरुवनंतपुरम में हुआ था। इनके पिता टी. एस.कण्णुसामी पिळ्ळै और माता सीतै थी। इनके तीन भाई थे शंकरन, मुत्तुस्वामी और भगवती। उन दिनों शंकरदास स्वामिगळ बॉय्स कंपनीज़ के नाम से नाटक मंडली चलाते थे। चारों भाइयों ने इस मंडली में काम किया। बाद में इन्होंने अपनी कंपनी की स्थापना की जिसका नाम था देवी बाला षण्मुखानंदा सभा। इसके ज़रिए इन्होंने सामाजिक क्राँतिकारी नाटकों का मंचन किया। “गुमास्ताविन पेण्”, “अंदमान कैदी”, “उयिरोवियम्”, “मुळिळल रोजा”,

"मनिदन", "शिवलीला" जैसे नाटक विशेष उल्लेखनीय हैं।

सन् 1943 में श्री टी. के. षण्मुखम "अव्वैयार" नाटक में एक वृद्ध स्त्री यानि अव्वैयार का किरदार निभाकर बहुत लोकप्रिय हुए। 31 साल की उम्र में इन्होंने इस किरदार में इस कदर जान डाल दी थी कि मानो ये मंच पर अव्वैयार का जीवन जी रहे हों। इस किरदार के कारण उनका नाम **"अव्वै षण्मुगम"** पड़ा। बाद में टी. के. षण्मुखम जी ने "मेनका","पेण्मनम्","बिलकणन","ओर इरवु" जैसे फिल्मों में भी काम किया। शिवाजी गणेशन अभिनीत "कप्पलोट्टिय तमिळन्" फिल्म में इन्होंने सुब्रह्मणिय शिवा की भूमिका निभाई और खूब नाम कमाया।

षण्मुखम् बच्चों के लिए भी नाटकों का निर्माण करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने "अप्पाविन् आसै","पलाप्पळम" जैसे नाटक भी बनाए। इन दोनों नाटकों में उस समय 10 साल की उम्र के कमल हासन ने प्रधान भूमिका निभाई थी। आज भी अभिनेता कमल हासन "हमारे षण्मुखम अण्णाच्चि" के शब्दों से श्री टी. के. षण्मुखम् का स्मरण करते हैं। इसी भक्ति-भावना से कमल हासन ने अपनी कॉमेडी फिल्म का नाम, अपने गुरु अव्वै षण्मुखम की याद में "अव्वे षण्मुखि" रखा, जिसका हिंदी रूपान्तर है "चाची 420".

टी. के. षण्मुखम की नाटक मंडली के नाटकों में अभिनय करनेवालों में से एन. एस. कृष्णन, के. आर. रामसामी, एस. वी. सुब्बैया, एस. वी. सहस्रनामम, ए. पी. नागराजन, एस. एस, राजेन्द्रन, टी वी नारायणसामी, आर. एम. वीरप्पन, फ्रेंड रामसामी, एम.आर. स्वामीनाथन, टी. के. रामचन्द्रन, एम. एन. राजम, एम. एस. द्रौपदी, टी. ए. जयलक्ष्मी आदि कलाकार बाद में फिल्म जगत में भी काफी प्रसिद्ध हुए।

तमिल नाटक जगत में श्री टी. के. षण्मुखम की उपलब्धियों और समर्पण-भाव के कारण अव्वै षण्मुखम ने लोगों के मन में अमिट छाप छोड़ दी। चेन्नै शहर में एक प्रमुख सड़क का नाम भी अव्वै षण्मुखम सालै है।

आज तमिल नाटक जगत में कई नाटक मंडलियाँ सक्रिय रूप से अपने नाटकों का मंचन कर रही हैं। तमिल फिल्मी जगत के पुराने सितारे जैसे एस. वी. शेखर, वाई. जी. महेन्द्रन, मादु बालाजी, टी. वी. वरदराजन, कात्ताडि राममूर्ति आदि दिग्गज आज भी हास्य-व्यंग्य पर आधारित अपने नाटकों से लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं। डम्मीज़, सत्य साई क्रियेशन्स, तमिळरसन थियेटर्स, रेलप्रिया, मयूरप्रिया आदि तमिल नाटक मंडलियाँ भी प्रति वर्ष चेन्नै स्थित नारद गान सभा में आयोजित की जानेवाली ग्रीष्मकालीन नाटक प्रतियोगिता में अपने नए नाटकों का मंचन करके निर्देशन, अभिनय, संगीत, प्रकाशन, मेक-अप जैसी विधाओं में पुरस्कार जीते हैं।

नाटक-कला को प्रोत्साहित करने के लिए हमें भी नाटकों को देखकर कलाकारों को प्रेरित करना चाहिए। लोगों में यह जागरुकता पैदा करनी चाहिए कि नाटक भी हमारा भरपूर मनोरंजन कर सकते हैं, युवा-पीढ़ी को भी यह महसूस कराना हमारा कर्त्तव्य है ताकि यह नाटक-कला फलता-फूलता रहे।

रंगमंच वह जीवन है, जहाँ इसको जीने वाला, अपने एक जीवन में,

दूसरों के अनगिनत जीवन, अनगिनत बार जीता है।

*****

पैसे की दुनिया (कविता)

नारायण जी चौबे

डिपो भंडार सहायक, सामान्य भंडार डिपो, पेरंबूर

ये पैसे, वो पैसे,
इधर पैसे, उधर पैसे!
यहाँ पैसे , वहाँ पैसे
जहां देखो तहां पैसे!!

पैसे पैसे की है भरमार,
पैसे से मेला, पैसे की बाजार!
पैसे से रिश्ते, पैसों से परिवार
पैसे से है सब कुछ
पैसा नहीं तो,
आप सबसे बेकार!!

पैसे से इज्जत, पैसे से सम्मान,
पैसे की मंदिर, पैसे से भगवान!
पैसे पर ईमान
पैसे से इंसान
पैसे से है सब कुछ
पैसा नहीं तो,
तू जानवर समान!!

पैसे से दोस्त, पैसे की यारी,
पैसे की है पूछ, पैसे से रिश्तेदारी,
पैसा नहीं तो मक्कार है तू
धिक्कार तुझपर, ग्वार है तू
अपने ही हो जायेंगे बेगाने,
कसेंगे तंज, सुनाएंगे ताने!!

09.02.2024 -68वां रेल सप्ताह समारोह
राजभाषा शील्ड - मदुरै मंडल

राजभाषा शील्ड
कैरेज व वैगन वर्क्स/पेरंबूर

21.02.2024
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
प्रश्नमंच

राजभाषा हिंदी

12 ' प्र ' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास